21-सूरत-अम्बिया

इस मक्की सूरत में '7' रूकू और '112' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۚ ۝١ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ
اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۙ ۝٢ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ
اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝٣ قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۡ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٤ بَلْ
قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍۢ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ښ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ۝٥ مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ
قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝٦ وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ
كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٧ وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝٨ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ
فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَاۗءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝٩ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٠

आयत न० 01 से 10

उन (इनकार करने वाले) **लोगों से उन का हिसाब** (का वक़्त) **नज़दीक आ पहुंचा** (यानी क़ियामत धीरे-धीरे नज़दीक होती जाती है) **और ये** (अभी) **भूल** (ही) **में** (पड़े) **हैं** (और उस के यक़ीन करने और उसकी तैयारी करने से) **मुंह फेरे हुए हैं(1)** (और उन की बेपरवाई यहां तक बढ़ गई है कि) **उन के पास उन के रब की तरफ़ से जो नसीहत की नई बात** (उन की हालत के हिसाब से) **आती है** (उससे सबक़ लेने के बजाए) **ये उस को इस तरह सुनते हैं कि** (उस के साथ) **हंसी करते हैं(2)** (और) **उन के दिल** (इस तरफ़) **ध्यान नहीं करते, और ये ज़ालिम** (और काफ़िर) **लोग** (आपस में) **चुपके चुपके बातें करते हैं** (यानी इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशें करके उस को मिटाना चाहते हैं) **कि ये** (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **सिर्फ़ तुम जैसे एक** (आम) **आदमी हैं** (यानी नबी नहीं और यह लुभावना कलाम जो सुनाते हैं असल में पैग़म्बरी का मोजिज़ा नहीं बल्कि जादू है), **तो क्या** (इस बात के बावजूद) **फिर भी तुम जादू की बात सुनने को** (उन के पास) **जाओगे**

जब कि तुम (इस बात को अच्छी तरह) **जानते** (समझते) **हो**(3) **पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **ने** (जवाब में) **कहा कि मेरा रब हर बात को** (चाहे) **आसमान में हो और** (चाहे) **ज़मीन में** (हो और चाहे खुली हो या छुपी हो अच्छी तरह) **जानता है** (सो तुम्हारी कुफ़्र की बातो को भी जानता है) **और** (वक़्त पर सज़ा देगा क्योंकि) **वो सब कुछ सुनने वाला सब कुछ जानने वाला है**(4) (और उन्होंने इस सच्चे कलाम को सिर्फ़ जादू ही नहीं कहा) **बल्कि यह** (भी) **कहा कि यह** (कुरआन) **बेजोड़ ख़्वाब** (जैसा) **है** (कि असलीयत में लुभावना भी नहीं) **बल्कि उन्होंने** (यानी पैग़म्बर ने) **इस को** (अपने आप) **घड़ लिया है** (और यह बात कुछ कुरआन ही के साथ ख़ास नहीं) **बल्कि ये तो शाइर आदमी** (है इन की सभी बातें ऐसी ही घड़ी हुई होती हैं मतलब यह कि पैग़म्बर नहीं) **हैं,** (और पैग़म्बरी के बड़े दावेदार हैं) **तो उन को चाहिए कि ऐसी कोई** (बड़ी) **निशानी लाएं जैसा पहले लोग पैग़म्बर बनाए गये** (थे और बड़े-बड़े मोजिज़े दिखाए उस वक़्त हम पैग़म्बर मानें और ईमान लाएं और यह कहना भी एक बहाना था वर्ना पहले पैग़म्बरों को भी न मानते) **थे**(5) (अल्लाह तआला जवाब में कहते हैं कि) **उन से पहले जिन बस्ती वालों को हम ने हलाक किया वो** (मांगे हुए मोजिज़े दिखाने के बावजूद) **ईमान नहीं लाए सो क्या ये लोग** (उन मोजिज़ों के देखने पर) **ईमान ले आएंगे** (और कुरआन काफ़ी मोजिज़ा है)(6) **और** (पैग़म्बरी के बारे में जो उनको यह शक है कि पैग़म्बर इन्सान न होना चाहिए उस का जवाब यह है कि) **हम ने आप से पहले सिर्फ़ आदमियों ही को पैग़म्बर बनाया है जिनके पास हम वही भेजा करते थे सो** (ऐ इनकार करने वालो) **अगर तुम को** (यह बात) **पता न हो तो किताब वालों से पूछ लो** (क्योंकि ये लोग चाहे काफ़िर हों मगर ऐसी बात बताने वाले का सच्चा मुसलमान होना ज़रूरी नहीं फिर तुम उन को अपना दोस्त समझते हो तो उन की बात का यक़ीन भी होना चाहिए)(7) **और** (इसी तरह यह बात कि पैग़म्बर फ़रिशता होना चाहिए उस का जवाब यह है कि) **हम ने उन पैग़म्बरों के** (जो कि पहले हो चुके हैं) **ऐसे बदन नहीं बनाए थे जो खाना न खाते हों** (यानी फ़रिशता न बनाया था) **और** (ये लोग जो आप की मौत के इन्तिज़ार में खुशियां मना रहे हैं तो) **वो** (पहले पैग़म्बर) **लोग** (भी दुनिया में) **सदा रहने वाले नहीं हुए** (बस अगर आप भी न रहें तो पैग़म्बरी में क्या ऐतराज़ हो सकता है मतलब यह कि जैसे पहले पैग़म्बर थे वैसे ही आप भी हैं और ये लोग जिस तरह आप को झुटलाते हैं इसी तरह उन पैग़म्बरों को भी उस ज़माने के काफ़िरों ने झुटलाया था)(8) **फिर हम ने जो उन पैग़म्बरों से वादा किया था** (कि झुटलाने वालों को अज़ाब से हलाक करेंगे और तुम को और मोमिनों को बचा लेंगे हमने) **उस** (वादे) **को सच्चा किया यानी उन को और जिस जिस को** (बचाना) **चाहा** (उस अज़ाब

से) **हम ने बचा लिया और** (उस अज़ाब से ताबेदारी की) **हद से निकलने वालों को हलाक किया** (सो इन लोगों को डरना चाहिए)(9) **हम तुम्हारे पास ऐसी किताब भेज चुके हैं कि उसमें तुम्हारे लिए नसीहत है, क्या** (ऐसी तबलीग़ व नसीहत के बावजूद) **फिर भी तुम समझते** (नहीं और नहीं मानते तो इस झुटलाने के बाद तुम पर दुनिया व आख़रत में अज़ाब आए तो अचम्भे की बात) **नहीं**(10)।

नोटः- तफ़सीर क़ुरतबी में है कि ऊपर आयत से मालूम हुआ कि जाहिल आदमी जिस को शरीअत के हुक्म मालूम न हों उस पर आलिमों की बात मानना वाजिब है कि आलिम से पूछ कर उसके हिसाब से चला करे।

وَ كَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّ اَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝١١ فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا
يَرْكُضُوْنَ ۝١٢ لَا تَرْكُضُوْا وَ ارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَ مَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ۝١٣ قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا
ظٰلِمِيْنَ ۝١٤ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ۝١٥

आयत न० 11 से 15

और हमने बहुत सी बस्तियां जिन के रहने वाले ज़ालिम (यानी काफ़िर) **थे तबाह कर डाली और उन के बाद दूसरी क़ौम पैदा कर दी**(11) **तो जब उन ज़ालिमों ने हमारा अज़ाब आता देखा तो** (अज़ाब से बचने के लिए) **उस बस्ती से भागना शुरू किया**(12) (अल्लाह तआला कहते हैं कि) **भागो मत और अपने ऐश के सामान और अपने मकानों की तरफ़ वापस चलो शायद तुम से कोई पूछे** (कि तुम पर क्या गुज़री यानी जिस सामान और मकान पर तुम को घमन्ड था अब न वो सामान रहा न मकान न किसी दोस्त हमदर्द का नाम निशान रहा)(13) **वो लोग** (अज़ाब आने के वक़्त) **कहने लगे कि हाय हमारी बदनसीबी बेशक हम ज़ालिम थे**(14) **उन की ये ही पुकार जारी रही यहां तक कि हम ने उन को ऐसा** (मिलयामेट) **कर दिया जिस तरह खेती कट गई हो या आग बुझ गयी हो**(15)।

وَ مَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَ الْاَرْضَ وَ مَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ۝١٦ لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا
فٰعِلِيْنَ ۝١٧ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ؕ وَ لَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ۝١٨ وَ لَهٗ مَنْ

فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ مَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ لَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ۚ﴿۱۹﴾ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَ
النَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿۲۰﴾ اَمِ اتَّخَذُوْۤا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ﴿۲۱﴾ لَوْ كَانَ فِيْهِمَاۤ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ
فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۲۲﴾ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَ هُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿۲۳﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ
اٰلِهَةً ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَ ذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ
مُّعْرِضُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَ مَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْۤ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿۲۵﴾ وَ قَالُوا اتَّخَذَ
الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۙ﴿۲۶﴾ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَ هُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿۲۷﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ
اَيْدِيْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ وَ لَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَ هُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَ مَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ
اِنِّيْۤ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۠﴿۲۹﴾

आयत न० 16 से 29

और (हमारे अकेला होने पर हमारी पैदा की हुई चीज़ें सबूत हैं क्योंकि) **हम ने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच में है उसको इसलिए नहीं बनाया कि हम कोई बेकार का काम** (या खेल तमाशा) **करने वाले हों** (बल्कि इन में बहुत सी भलाइयां और फ़ाइदे हैं जिन में एक बड़ा फ़ाइदा तौहीद पर दलील है)(16) **अगर हम** (आसमान और ज़मीन को किसी ख़ास फ़ाइदे के लिए न बनाते बल्कि) **खिलौना बनाना चाहते** (जिसमें कोई फ़ाइदा न होता बल्कि दिल बहलाना होता) **तो ख़ास अपने पास की चीज़ों को बना लेते अगर हम को यह करना होता**(17) (बस साबित हुआ कि हम ने बेकार पैदा नहीं किया) **बल्कि** (हक़ की सच्चाई और झूट के झूटा होने को साबित करने के लिए पैदा किया है और) **हम** (उस) **हक़ बात को** (जिस के सबूत पर पैदा की हुई चीज़ें दलील हैं) **झूट बात पर** (इस तरह हावी कर देते हैं जैसे ऐसा समझो कि हम इस को उस पर) **फेंक मारते हैं सो वो** (हक़) **उस** (झूट) **का भेजा निकाल देता है** (यानी उस पर छा जाता है) **सो वो** (झूट दब कर) **एक दम मिलयामेट हो जाता है** (यानी तौहीद की दलीलें शिर्क को ग़लत साबित कर देती हैं), **और** (तुम फिर भी शिर्क करते हो तो) **तुम्हारे लिए उस बात से बड़ी ख़राबी है जो तुम** (हक़ के ख़िलाफ़) **घड़ते हो**(18) **और** (अल्लाह तआ़ला की वो शान है कि) **जितने कुछ आसमान और ज़मीन में हैं सब उसी के हैं, और** (उनमें से) **जो अल्लाह के नज़दीक** (बड़े मक़बूल व नज़दीकी) **हैं** (उन की बन्दगी की यह हालत है कि) **वो उस की इबादत से सरकशी नहीं करते और न**

थकते हैं(19) (बल्कि) **रात और दिन** (अल्लाह की) **तस्बीह करते हैं** (किसी वक़्त) **सुस्ती नहीं करते** (जब उन की यह हालत है तो आम लोग तो किस गिनती में हैं बस इबादत के लाइक़ वो ही है और जब कोई दूसरा ऐसा नहीं तो फिर उस का साझी समझना कितनी ना समझी है)(20) **क्या** (तौहीद के इन सबूतों के बावजूद) **उन लोगों ने अल्लाह के सिवा और माबूद बना रक्खे हैं** (ख़ास कर) **ज़मीन की चीज़ों में से** (जो कि और भी घटिया हैं जैसे कि पत्थर या धातों के बुत) **जो किसी को ज़िन्दा करते हैं** (यानी जो जान भी न डाल सकता हो ऐसा मजबूर कब माबूद होने के क़ाबिल होगा)(21) **ज़मीन** (में या) **आसमान में अगर अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई और माबूद** (भी) **होता तो दोनों में फ़साद हो जाता** (क्योंकि दोनों अपनी मर्ज़ी पूरी करने के लिए एक दूसरे से टकराते और ऐसा हुआ नहीं इसलिए ख़ुदा एक ही है) **सो** (इससे साबित हुआ कि) **अल्लाह तआ़ला जो कि मालिक है अर्श का उन बातों से पाक है जो कुछ ये लोग बयान कर रहे** (हैं कि नऊ़ज़ुबिल्लाह उस के और साझी भी) **हैं**(22) **वो** (ऐसी शान वाला है कि वो) **जो कुछ करता है उससे कोई पूछताछ नहीं कर सकता और दूसरों से पूछताछ की जा सकती** (है यानी अल्लाह तआ़ला पूछताछ कर सकता है बस कोई बड़ाई में उस का साझी नहीं फिर इबादत में कोई कैसे साझी हो सकता) **है**(23) **क्या अल्लाह को छोड़ कर उन्होंने और माबूद बना रक्खे हैं,** (उन से) **कहिए कि तुम** (इस दावे पर) **अपनी दलील लाओ, यह मेरे साथ वालों की किताब** (यानी क़ुरआन) **और मुझ से पहले लोगों की किताबें** (यानी तौरेत व इन्जील और ज़बूर) **मौजूद हैं** (जिन का सच्ची होना और अल्लाह की तरफ़ से होना साबित है और दूसरी किताबों में चाहे बदलाव हुआ है मगर क़ुरआन में बदलाव नहीं हो सकता बस जो बात क़ुरआन से साबित हो वो बेशक सही है, और इन सब सबूतो से तो ये लोग तौहीद को मान जाते लेकिन फिर भी नहीं मानते) **बल्कि उन में ज़्यादा वो ही हैं जो हक़ बात का यक़ीन नहीं करते सो** (इस वजह से) **वो** (इसके मानने से) **मुंह मोड़ रहे हैं**(24) **और** (यह तौहीद कोई नई बात नहीं जिससे घबराहट हो बल्कि पुरानी शरीअत है जैसा कि) **हम ने आप से पहले कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा जिस के पास हम ने यह वही न भेजी हो कि मेरे सिवा कोई माबूद** (होने के लाइक़) **नहीं बस मेरी** (ही) **इबादत किया करो**(25) **और ये** (मुशरिक) **लोग** (जो हैं उन में से कुछ) **ऐसा कहते हैं कि** (नऊ़ज़ुबिल्लाह) **अल्लाह तआ़ला ने** (फ़रिशतों को) **औलाद बना रक्खी है** (तौबा-तौबा) **वो** (अल्लाह तआ़ला इससे) **पाक है,** (और वो फ़रिशते उस की औलाद नहीं है) **बल्कि** (उस के) **बन्दे हैं** (हां) **इज़्ज़त वाले** (बन्दे हैं इसी से नासमझों को शक हो गया)(26) **वो** (तो ऐसे ताबेदार हैं कि) **उस से आगे बढ़ कर बात नहीं कर**

सकते (बल्कि हुक्म के इन्तिज़ार में रहते हैं) **और वो उसी के हुक्म के हिसाब से चलते** (हैं उस के ख़िलाफ़ नहीं कर सकते) **हैं(27)** (क्योंकि वो जानते हैं कि) **अल्लाह तआ़ला उन की अगली पिछली बातों को जानता है और** (उन के अदब की यह हालत है कि) **वो सिवाए उस** (आदमी) **के जिसके लिए** (सिफ़ारिश करने की) **अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी हो और किसी की सिफ़ारिश नहीं कर सकते और वो सब अल्लाह तआ़ला के डर से सहमे रहते हैं(28) और** (मान लो अगर) **उन में से कोई यह कहे कि** (नऊ़ज़ुबिल्लाह) **मैं अल्लाह के सिवा माबूद हूं तो हम उस को जहन्नम की सज़ा देंगे,** (और) **हम ज़ालिमों को ऐसे ही सज़ा दिया करते** (हैं यानी अल्लाह का उन पर पूरा बस है जैसे और लोगों पर फिर वो अल्लाह की औलाद जिस के लिए ख़ुदा होना ज़रूरी है कैसे हो सकते) **हैं(29)।**

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि बड़ों का एक अदब यह भी है कि जब मजलिस में कोई बात आए तो जो उस मजलिस का बड़ा है उस के बोलने का इन्तिज़ार किया जाए पहले ही किसी और का बोल पड़ना अदब के ख़िलाफ़ है।

اَوَ لَمۡ يَرَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ كَانَتَا رَتۡقًا فَفَتَقۡنٰهُمَا ؕ وَجَعَلۡنَا مِنَ الۡمَآءِ كُلَّ شَىۡءٍ حَىٍّ ؕ اَفَلَا
يُؤۡمِنُوۡنَ ۝٣٠ وَجَعَلۡنَا فِى الۡاَرۡضِ رَوَاسِىَ اَنۡ تَمِيۡدَ بِهِمۡ ۖ وَجَعَلۡنَا فِيۡهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمۡ يَهۡتَدُوۡنَ ۝٣١ وَ
جَعَلۡنَا السَّمَآءَ سَقۡفًا مَّحۡفُوۡظًا ۖۚ وَّهُمۡ عَنۡ اٰيٰتِهَا مُعۡرِضُوۡنَ ۝٣٢ وَهُوَ الَّذِىۡ خَلَقَ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمۡسَ وَ
الۡقَمَرَ ؕ كُلٌّ فِىۡ فَلَكٍ يَّسۡبَحُوۡنَ ۝٣٣

आयत न० 30 से 33

क्या इन काफ़िरों को यह पता नहीं चला कि आसमान और ज़मीन (पहले) **बन्द थे** (यानी न आसमान से बारिश होती थी न ज़मीन से कुछ पैदावार) **फिर हम ने दोनों को** (अपनी कुदरत से) **खोल दिया** (कि आसमान से बारिश और ज़मीन से पैदावार शुरू हो गई)**, और** (बारिश से सिर्फ़ खेती की पैदावार ही नहीं होती बल्कि) **हम ने** (बारिश के) **पानी से हर जानदार चीज़ को बनाया** (है यानी हर ज़िन्दा जानदार के वजूद के लिए पानी ज़रूरी) **है, क्या** (इन बातों को सुन कर) **फिर भी ईमान नहीं लाते(30) और हम ने** (अपनी कुदरत से) **ज़मीन में पहाड़ इस लिए बनाए**

कि ज़मीन उन लोगों को लेकर हिलने न लगे, और हम ने उस (ज़मीन) **में चौड़े-चौड़े रास्ते बनाए ताकि लोग** (उन से अपने) **ठिकाने तक पहुंच जाएं(31) और हमने** (अपनी क़ुदरत से) **आसमान को** (ज़मीन के ऊपर) **एक छत** (की तरह) **बनाया जो** (हर तरह से) **सही सलामत** (महफ़ूज़) **है** (यानी गिरने से भी टूटने से भी और इससे भी कि शैतान वहां पहुंच कर आसमान की बातें सुन सकें), **और ये लोग उस** (आसमान के अन्दर) **की** (मौजूदा) **निशानियों से मुंह फेरे हुए हैं** (यानी उन में सोच विचार नहीं करते)(32) **और वो ऐसा** (क़ुदरत वाला) **है कि उस ने रात और दिन और सूरज और चान्द बनाए** (और वो निशानियां आसमान की ये ही हैं, और सूरज और चान्द में से) **हर एक एक-एक मदार में** (इस तरह चल रहे हैं कि जैसे) **तैर रहे हैं**(33)

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ؕ اَفَا۠ئِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ﴿۳۴﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَنَبْلُوْكُمْ
بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ؕ وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِيْ
يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۶﴾ خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ؕ سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا
تَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿۳۷﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۳۸﴾ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ
عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۳۹﴾ بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۴۰﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۴۱﴾ قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۴۲﴾ اَمْ
لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿۴۳﴾ بَلْ مَتَّعْنَا هٰۤؤُلَآءِ
وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۴۴﴾
قُلْ اِنَّمَاۤ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۖ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ
عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿۴۶﴾ وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ
شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ﴿۴۷﴾

आयत न० 34 से 47

और (ये लोग जो आप की मौत की ख़ुशियां मना रहे हैं यह मौत भी पैग़म्बरी के ख़िलाफ़ नहीं

क्योंकि) **हम ने आप से पहले भी किसी इन्सान के लिए** (चाहे वो पैग़म्बर हो या कोई और दुनिया में) **सदा रहना तय नहीं किया** (बस जैसे आप से पहले पैग़म्बरों को मौत आई उससे उन की पैग़म्बरी में किसी को शक नहीं हुआ इसी तरह आप की मौत से आप की पैग़म्बरी में कोई शक नहीं हो सकता), **फिर** (यह कि) **अगर आप को मौत आ जाए तो क्या ये लोग** (दुनिया में) **सदा-सदा को रहेंगे** (आख़िर ये भी मरेंगे फिर ख़ुशी की क्या बात है)(34) **हर जानदार मौत का मज़ा चक्खेगा, और** (यह जो हम ने कुछ दिनों की तुम को ज़िन्दगी दे रक्खी है तो सिर्फ़ इसलिए कि) **हम तुम को बुरी भली हालतों से अच्छी तरह आज़माते हैं** (बुरी हालत जैसे बीमारी, ग़रीबी और अच्छी हालत जैसे सहत और मालदारी कोई इनमें ईमान लाता है नेकी करता है कोई कुफ़्र और गुनाह करता है मतलब यह कि ज़िन्दगी इसलिए दे रक्खी है कि देखें कैसे-कैसे काम करते हो), **और** (इस ज़िन्दगी के ख़त्म पर) **फिर तुम सब हमारे पास चले आओगे** (और हर एक को उसके हिसाब से सज़ा व बदला देंगे)(35) **और** (इन की ये हालत है कि) **ये काफ़िर लोग जब आप को देखते हैं तो बस आप से हंसी मज़ाक़ करने लगते हैं,** (और आपस में कहते हैं कि) **क्या ये ही** (साहिब) **हैं जो तुम्हारे माबूदों का** (बुराई से) **ज़िक्र किया करते हैं** (सो आप पर तो बुतों के इनकार का भी ऐतराज़ है) **और** (ख़ुद) **ये लोग अल्लाह तआला के ज़िक्र पर इनकार** (और कुफ़्र) **किया करते हैं**(36) (और जब कुफ़्र की सज़ा की बात सुनते हैं तो झुटलाते हुए तक़ाज़ा करते हैं कि यह सज़ा जल्दी आजाए और जल्दी इन्सान की आदत में बसी हुई है कि) **इन्सान जल्दी ही** (के ख़मीर) **का बना हुआ है,** (सो ज़रा सब्र करो) **हम जल्दी ही** (उस के वक़्त आने पर) **तुम को अपनी निशानियां** (यानी सज़ाएं) **दिखाए देते हैं बस तुम मुझ से जल्दी मत मचाओ** (क्योंकि अज़ाब वक़्त से पहले आता नहीं और वक़्त पर टलता नहीं)(37) **और ये लोग** (जब अज़ाब की बात सुनते हैं तो पैग़म्बर और मोमिनों से यह) **कहते हैं कि यह वादा किस वक़्त आएगा** (यानी देर किस बात की है) **अगर तुम** (अज़ाब की ख़बर के बारे में) **सच्चे हो**(38) (असलीयत यह है कि इन को इस मुसीबत की ख़बर नहीं जो ऐसी बेफ़िक्री की बातें करते हैं) **काश इन काफ़िरों को उस वक़्त की ख़बर होती जबकि** (उन को सब तरफ़ से दोज़ख़ की आग घेरेगी और) **ये लोग** (उस) **आग को न अपने सामने से रोक सकेंगे और न अपने पीछे से और न उन की कोई मदद करेगा**(39) (और ये जो दुनिया ही में आग के अज़ाब की मांग कर रहे हैं सो यह ज़रूरी नहीं कि उन की मांग पर आग का अज़ाब आजाए) **बल्कि वो आग** (तो) **उन को एक दम से घेर लेगी सो उनके होश खो देगी फिर न ये उसे पीछे हटा सकेंगे और न उन को मुहलत दी जाएगी**(40) **और** (अगर वो दुनिया

में उस अज़ाब का नमूना दिखाने को कहें तो जान लें कि) **आप से पहले जो पैग़म्बर हुए हैं उन के साथ भी** (काफ़िरों की तरफ़ से) **मज़ाक़ किया गया फिर उन का मज़ाक़ उड़ाने वालों पर वो अज़ाब आगया जिस का वो मज़ाक़ उड़ाया करते थे(41)** (और उन से यह भी) **कह दीजिए** (कि दुनिया में जो तुम अज़ाब से बचे हो सो वो भी अल्लाह तआला की महरबानी है और अगर तुम इस को नहीं मानते तो फिर बताओ) **कि वो कौन है जो रात और दिन में अल्लाह** (के अज़ाब) **से तुम्हारा बचाव करता हो,** (मगर वो यह बात सुनकर भी नहीं मानते) **बल्कि वो लोग** (अब भी उसी तरह) **अपने** (सच्चे) **रब के ज़िक्र से** (यानी ईमान लाने से) **मुंह मोड़े हुए** (ही) **हैं(42) क्या उनके पास हमारे सिवा और ऐसे माबूद हैं कि** (उस बताए अज़ाब से) **उन का बचाव कर लेते हों, वो** (बेचारे उन का बचाव तो क्या करते वो तो) **ख़ुद अपना बचाव नहीं कर सकते** (जैसे कोई उन को तोड़ने लगे तो रोक थाम नहीं कर सकते बस न वो उन के माबूद उन का बचाव कर सकते हैं) **और न हमारे मुक़ाबिले में कोई उन का साथ दे सकता है(43)** (और ये लोग सारे सबूतों के बावजूद हक़ बात को नहीं मानते तो यह वजह नहीं कि दलील में कुछ कमी है) **बल्कि** (असल वजह इस की यह है कि) **मैंने उन को और उनके बाप दादों को** (दुनिया का) **ख़ूब सामान दिया यहां तक कि उन पर** (उसी हालत में) **एक ज़माना बीत गया** (जिससे ऐश आराम में खा खा कर बेपरवा हो गये)**, क्या उन को यह दिखाई नहीं देता कि हम** (उन की) **ज़मीन को** (इस्लाम की जीत से) **चारों तरफ़ से बराबर घटाते चले जाते हैं, सो क्या ये लोग** (यह उम्मीद रखते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मोमिनों पर) **हावी हो जाएंगे(44)** (अगर इस पर भी हटधर्मी से अज़ाब ही मांगे तो) **आप कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ वही के वास्ते से तुम को डराता हूं** (अज़ाब का आना मेरे बस से बाहर है)**, और** (यह बात काफ़ी है मगर) **ये बहरे जिस वक़्त** (हक़ की तरफ़ बुलाए जाने के लिए अज़ाब से) **डराए जाते हैं सुनते ही नहीं** (और सच्चाई जानने की कोशिश ही नहीं करते)(45) **और** (हिम्मत इतनी है कि) **अगर उन को आप के रब के अज़ाब का एक झोंका भी ज़रा लग जाए तो** (सारी बहादुरी ख़त्म हो जाए और) **यह कहने लगें कि हाय हमारी बदनसीबी** (कैसी हमारे सामने आई) **सचमुच हम ग़लती पर थे** (बस इस हिम्मत पर अज़ाब मांगते हैं)(46) **और** (असल में उन की शरारत तो ऐसी ही है कि दुनिया में ही फ़ैसला कर देते मगर किसी वजह से यह काम आख़रत के लिए उठा रक्खा है वहां) **क़ियामत के दिन हम इन्साफ़ की तराज़ू लाएंगे** (और सब के कामों को तोलेंगे) **सो किसी पर असल में ज़ुल्म न होगा, और** (ज़ुल्म न होने का यह नतीजा होगा कि) **अगर** (किसी का) **कोई काम राई के दाने के बराबर**

भी होगा तो हम उस को (वहां) **सामने ले आएंगे** (और उसको भी तोलेंगे)**, और हम हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं** (हमारे इस तोलने और हिसाब के बाद फिर किसी हिसाब-किताब की ज़रूरत न रहेगी बल्कि उस पर सब फ़ैसला हो जाएगा)(47)।

नोटः- एक हदीस में है कि आमाल की तराजू पर एक फ़रिशता तैनात होगा और हर इन्सान को वहां लाया जाएगा अगर उस की नेकियों का पल्ड़ा भारी होगा तो फ़रिशता मुनादी करेगा कि फ़ला आदमी कामयाब हो गया अब कभी उस को महरूमी नहीं होगी और अगर नेकियों का पल्ड़ा हल्का रहा तो फ़रिशता मुनादी करेगा कि फ़लां आदमी नाकाम और महरूम हो गया अब कभी कामयाब न होगा। यह ऐलान सभी महशर वाले सुनेंगे। (क़ुरतबी)

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَ ضِيَآءً وَّ ذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۸﴾ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَ هُمْ مِّنَ
السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَ هٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿۵۰﴾

आयत न० 48 से 50

और हम ने (आप से पहले) **मूसा और हारून** (अलैहिमुस्सलाम) **को एक फैसले की और रौशनी की और** (उन) **परहेज़गारों के लिए नसीहत की चीज़** (यानी तौरेत) **दी थी**(48) **जो** (परहेज़गार) **अपने रब से बिन देखे डरते हैं और** (अल्लाह ही से डरने की वजह से) **वो लोग क़ियामत से** (भी) **डरते हैं** (क्योंकि क़ियामत में इसका डर है कि अल्लाह तआ़ला की नाराज़ी और सज़ा न होने लगे)(49) **और** (जैसे वो किताब हम ने उन को दी थी इसी तरह) **यह** (क़ुरआन भी) **बड़ी बरकतों वाली नसीहत** (की किताब) **है जिस को हम ने उतारा है, सो क्या** (यह साबित हो जाने के बाद कि यह अल्लाह की उतारी हुई है) **फिर भी तुम इस का** (अल्लाह की तरफ़ से होने का) **इनकार करते हो**(50)।

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَ كُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿۵۱﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ
اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿۵۲﴾ قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿۵۳﴾ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ﴿۵۴﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿۵۵﴾ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ الَّذِيْ

فَطَرَهُنَّ ۖ وَ اَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَ تَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾
فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٨﴾ قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَاۤ اِنَّهٗ لَمِنَ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٩﴾ قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗۤ اِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰۤى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَشْهَدُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالُوْۤا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٢﴾ قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ
كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٣﴾ فَرَجَعُوْۤا اِلٰۤى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْۤا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾ ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ
عَلِمْتَ مَا هٰۤؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّ لَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾ اُفٍّ لَّكُمْ وَ
لِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَ انْصُرُوْۤا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْنَا
يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ وَ اَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ﴿٧٠﴾ وَ نَجَّيْنٰهُ وَ لُوْطًا اِلَى
الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ ؕ وَ يَعْقُوْبَ نَافِلَةً ؕ وَ كُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَ
جَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَ اِقَامَ الصَّلٰوةِ وَ اِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَ كَانُوْا
لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿٧٣﴾

आयत न० 51 से 73

और हम ने इस (मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने) **से पहले इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **को** (उन की शान के हिसाब से) **समझ बूझ दी थी और हम उन** (की ख़ूबियों) **को अच्छी तरह जानते थे** (51) (उन का वो वक़्त याद कीजिए) **जब कि उन्होंने अपने बाप से और अपनी क़ौम से** (उनको बुत परस्ती में देख कर) **कहा कि क्या** (बेकार) **मूरतें हैं जिन** (की इबादत) **पर तुम जमे बैठे हो** (यानी ये हरगिज़ इबादत के क़ाबिल नहीं)(52) **वो लोग** (जवाब में) **कहने लगे कि हम ने अपने बड़ों को इन की इबादत करते हुए देखा है** (और वो लोग समझदार थे इससे पता चलता है कि ये मूरतें इबादत के लाइक़ हैं)(53) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि बेशक तुम और तुम्हारे बाप दादे** (इन को इबादत के लाइक़ समझने में) **खुली ग़लती में** (पड़े हो यानी ख़ुद उन ही के पास इन के माबूद होने की कोई दलील और सनद नहीं है वो तो इसलिए गुमराही में हैं और तुम ऐसों के पीछे चलते हो जो बेदलील बेसबूत बातों के पीछे चलने वाले हैं इसलिए तुम गुमराही में) **हो**(54) **वो लोग कहने लगे कि क्या तुम हमारे सामने सच्ची बात कर रहे हो या** (यूंही) **दिल्लगी कर रहे हो**(55) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि नहीं** (दिल्लगी नहीं बल्कि सच्ची बात है कि ये इबादत

के क़ाबिल नहीं) **बल्कि तुम्हारा** (सच्चा) **रब** (जो इबादत के लाइक़ है) **वो है जो सारे आसमानों का और ज़मीन का रब है जिसने** (रब होने के सिवा) **उन सब** (आसमानों और ज़मीन और उनमें जो कुछ है यहां तक कि ये बुत भी सब) **को पैदा किया, और मैं इस** (दावे) **पर दलील भी रखता हूं** (तुम्हारी तरह दूसरों के पीछे नहीं चलता)(56) **और अल्लाह की क़सम मैं तुम्हारे इन बुतों की दुर्गति करूंगा जब तुम** (उनके पास से) **चले जाओगे** (ताकि उन का बेबस और मजबूर होना अच्छी तरह पता चल जाए उन लोगों ने यह समझ कर कि ये अकेले क्या कर सकते हैं कुछ ध्यान न किया होगा और चले गये)(57) **तो** (उन लोगों के चले जाने के बाद) **उन्होंने उन बुतों को** (तोड़ फोड़ कर) **टुकड़े-टुकड़े कर दिया सिवाए उन के एक बड़े बुत के** (कि उस को छोड़ दिया जिससे इशारा होता है कि कहीं उसी ने तो सब को नहीं तोड़ा) **कि शायद वो लोग इब्राहीम की तरफ़** (पूछने के लिए) **आएं**(58) (बस वो लोग जो बुत ख़ाने में आए और बुतों की दुर्गति देखी तो आपस में) **कहने लगे यह** (बेअदबी का काम) **हमारे बुतों के साथ किसने किया है इसमें कोई शक नहीं कि उसने बहुत ही बुरा किया**(59) **कुछ लोगों ने कहा कि हम ने एक नौजवान आदमी को जिसे इब्राहीम कहते हैं इन बुतों का** (बुराई से) **ज़िक्र करते सुना है**(60) (फिर) **वो लोग बोले कि** (जब यह बात है तो) **अच्छा उस को सब आदमियों के सामने लेकर आओ ताकि** (शायद वो इक़रार करले और) **वो लोग** (उस के इक़रार के) **गवाह हो जाएं**(61) (फिर जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम को लाया गया तो) **उन लोगों ने कहा कि क्या हमारे बुतों के साथ तुमने यह हरकत की है ऐ इब्राहीम**(62) **उन्होंने** (जवाब में) **कहा कि** (तुम यह क्यों नहीं सोचते कि यह हरकत मैंने) **नहीं की बल्कि उन के उस बड़े** (गुरू) **ने की सो इन** (बुतों ही) **से पूछ लो**(ना) **अगर ये बोलते हों** (और अगर ये बोल भी नहीं सकते तो इन्हें कैसे ख़ुदा मान लिया)(63) **इस पर वो लोग अपने जी में सोचे फिर** (आपस में) **कहने लगे कि असलीयत में तुम ही लोग नाहक़ पर हो** (और इब्राहीम हक़ पर है कि जो ऐसा बेबस हो वो क्या माबूद होगा)(64) **फिर** (शर्म के मारे) **अपने सरों को झुका लिया** (इब्राहीम अलैहिस्सलाम से बहुत दबी आवाज़ में बोले कि) **ऐ इब्राहीम तुम को तो पता ही है कि ये बुत** (कुछ) **बोलते नहीं** (हम उन से क्या पूछें इससे साबित हुआ कि जब बोलते नहीं तो और कुछ तो क्या कर सकते हैं)(65) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने** (उस वक़्त) **कहा कि** (अफ़सोस जब ये ऐसे हैं) **तो क्या अल्लाह को छोड़ कर तुम ऐसी चीज़ की इबादत करते हो जो तुम को न कुछ नफ़ा पहुंचा सकें और न कुछ नुक़सान पहुंचा सकें**(66) **अफ़सोस है तुम पर** (कि हक़ जानने के बावजूद ग़लत बात पर जमे हो) **और उन पर** (भी) **जिन को तुम अल्लाह**

के सिवा पूजते हो, क्या तुम (इतना भी) **नहीं समझते(67) वो लोग** (झुंझला कर) **कहने लगे कि इन** (इब्राहीम) **को आग में जला दो और अपने माबूदों का** (इन से) **बदला लो अगर तुम को कुछ करना है** (तो यह काम करो वर्ना बिल्कुल ही बात डूब जाएगी, बस सब ने एक राय होकर उस का सामान किया और उन को दहकती आग में डाल दिया)(68) **हम ने** (उस वक़्त आग को) **हुक्म दिया कि ऐ आग तू ठन्डी और सलामती वाली बन जा इब्राहीम के लिए** (यानी न ऐसी गर्म रह जिससे जलने की नौबत आए और न बहुत ठन्डी बर्फ़ हो कि उस की ठन्डक से तकलीफ़ पहुचें, बस ऐसा ही हो गया)(69) **और उन लोगों ने उन के साथ बुराई करना चाहा था** (कि हलाक हो जाएंगे) **सो हम ने उन्हीं लोगों को नाकाम कर दिया** (कि उन का मन चाहा पूरा न हुआ बल्कि और उल्टा इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सच्चाई का सबूत हो गया)(70) **और हमने इब्राहीम को और** (उनके भतीजे) **लूत** (अलैहिस्सलाम) **को** (कि उन्होंने क़ौम के ख़िलाफ़ इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तस्दीक़ की थी और इस वजह से लोग उन के भी मुख़ालिफ़ और दुशमन थे) **ऐसे मुल्क** (यानी शाम) **की तरफ़ भेज कर** (काफ़िरों के सताने से) **बचा लिया जिसमें हमने दुनिया जहान के लोगों के वास्ते** (भलाई व) **बरकत रक्खी है** (दुनिया की भी कि फलों की अच्छी पैदावार है और दीनी भी कि बहुत से पैग़म्बर वहां हुए यानी उन्होंने मुल्क शाम की तरफ़ अल्लाह के हुक्म से हिजरत की)(71) **और** (हिजरत के बाद) **हमने उन को इसहाक़** (बेटा) **और याकूब पोता दिया, और हमने उन सब** (बाप बेटे पोते) **को** (ऊंचे दर्जे का) **नेक** (बनाया यानी उन सब को नबी) **बनाया(72) और हम ने उन** (सब) **को इमाम बनाया** (जो कि पैग़म्बरी के लिए ज़रूरी है) **कि हमारे हुक्म से** (लोगों को) **राह बताते थे** (जो कि पैग़म्बरों की ज़िम्मेदारी है) **और हमने उन के पास नेक कामों के करने का और** (ख़ास कर) **नमाज़ की पाबन्दी का और ज़कात अदा करने का हुक्म भेजा** (यानी यह हुक्म भेजा कि इन कामों को किया करो) **और वो हमारी** (ख़ूब) **इबादत किया करते** (थे यानी उन को जो हुक्म हुआ था उस को अच्छी तरह अदा करते) **थे(73)।**

नोटः- लिखा है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम उस आग में सात दिन रहे और फ़रमाया करते थे कि मुझे उम्र में कभी ऐसी चैन नहीं मिली जितनी उन सात दिनों में हासिल थी। (मज़हरी)

وَ لُوْطًا اٰتَیْنٰهُ حُكْمًا وَّ عِلْمًا وَّ نَجَّیْنٰهُ مِنَ الْقَرْیَةِ الَّتِیْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ
فٰسِقِیْنَ ﴿74﴾ وَ اَدْخَلْنٰهُ فِیْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿75﴾ وَ نُوْحًا اِذْ نَادٰی مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ

فَنَجَّيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿۷۶﴾ۚ وَ نَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ
سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۷۷﴾

आयत न० 74 से 77

और लूत (अलैहिस्सलाम) **को हम ने हिकमत और इल्म** (पैग़म्बरों की शान वाला) **दिया और हम ने उन को उस बस्ती से छुटकारा दिया जिस के रहने वाले गन्दे-गन्दे काम करते थे** (जैसे शराब पीना गाना बजाना और सबसे बुरा काम लड़कों से बुरा काम करना और दूसरे बहुत से बुरे काम), **बेशक वो लोग बहुत बुरे** (और) **बदकार थे(74) और हम ने लूत को अपनी रहमत में** (यानी जिन बन्दों पर रहमत होती है उनमें) **दाख़िल किया** (क्योंकि) **बेशक वो बड़े** (दर्जे के) **नेक लोगों में से** (थे यानी पैग़म्बर) **थे(75) और नूह** (अलैहिस्सलाम के क़िस्से का ज़िक्र कीजिए कि उन्हों) **ने जब उस** (इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने) **से पहले** (अल्लाह तआ़ला से) **दुआ की** (कि इन काफ़िरों से मेरा बदला ले लीजिए) **तो हम ने उन की दुआ कुबूल की और उन को और उन के साथियों को बड़ी भारी मुसीबत से बचा लिया** (यानी काफ़िर जो उन्हें तरह-तरह की तकलीफ़ पहुंचाते और झुटलाते थे उससे छुटकारा मिला)(76) **और** (बचाया ऐसे कि) **हम ने ऐसे लोगों से उन का बदला लिया जिन्होंने हमारे** (उन) **हुक्मों को** (जो कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम लाए थे) **झूटा बताया था, बेशक वो लोग बहुत बुरे थे इसलिए हम ने उन सब को डुबा दिया(77)।**

وَ دَاوٗدَ وَ سُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَ كُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿۷۸﴾ۙ
فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَ كُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّ عِلْمًا ۫ وَّ سَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَ الطَّيْرَ ؕ وَ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿۷۹﴾
وَ عَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿۸۰﴾ وَ لِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً
تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَ كُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿۸۱﴾ وَ مِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَ
يَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَ كُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿۸۲﴾ۙ

आयत न० 78 से 82

और दावूद और सुलैमान (अलैहिमुस्सलाम के क़िस्से) **का ज़िक्र कीजिए जब कि दोनों किसी खेत में फ़ैसला करने लगे** (जिसमें ग़ल्ला था या अंगूर के पेड़ थे) **जब कि उस** (खेत) **में कुछ**

लोगों की बकरियां रात के वक़्त जा घुसीं (और उस को चर गईं), **और हम उस फ़ैसले को जो** (मुक़दमे वाले) **लोगों के बारे में हुआ था देख रहे थे**(78) **सो हम ने उस फ़ैसले** (की आसान सूरत) **की समझ सुलेमान को देदी, और** (वैसे) **हम ने दोनो** (ही) **को हिकमत और इल्म दिया** (था यानी दावूद अलैहिस्सलाम का फ़ैसला भी शरीअत के ख़िलाफ़ न) **था, और हम ने दावूद** (अलैहिस्सलाम) **के साथ ताबे कर दिया था पहाड़ों को कि** (उन की तस्बीह के साथ) **वो** (भी) **तस्बीह किया करते थे और** (इसी तरह) **परिन्दों को भी** (ताबे कर दिया था), **और** (कोई इस बात पर अचम्भा न करे क्योंकि इन कामों के) **करने वाले हम थे** (और हमारी कुदरत से कुछ बाहर नहीं फिर अचम्भे की क्या बात है)(79) **और हम ने उन को** (जंगी लिबास) **ज़रह** (बनाने) **की कारीगरी सिखाई तुम लोगों के** (नफ़े के) **वास्ते** (यानी) **ताकि वो** (ज़रह लड़ाई में) **तुम को एक दूसरे के हमले से बचाए,** (और यह बड़ी नेमत इसलिए दी ताकि तुम शुक्र करो) **तो तुम** (इस नेमत का) **शुक्र करोगे** (भी या नहीं)(80) **और हम ने सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **का तेज़ हवा को ताबे बना दिया था कि वो उन के हुक्म से उस ज़मीन की तरफ़ को चलती जिसमें हम ने बरकत रक्खी है** (यानी मुल्क शाम जहां वो रहते थे मतलब यह कि जब कहीं जाते और आते थे तो सुलेमान अलैहिस्सलाम एक तख़्त पर अपनी फ़ौज और साथियों के साथ कुर्सियों पर बैठ जाते फिर हवा को हुक्म देते वो सब को उठा कर थोड़ी देर में एक महीने का रास्ता तय करती), **और हम हर चीज़ को जानते हैं** (हमारे इल्म में सुलेमान अलैहिस्सलाम को ये चीज़ें देने में छुपी भलाई थी इसलिए दी गईं)(81) **और कुछ शैतान** (यानी जिन्नात) **ऐसे थे कि सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **के लिए** (दरियाओं में) **डुबकी लगाते थे** (ताकि मोती निकाल कर उनके पास लाएं) **और वो और काम भी इसके सिवा** (सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिए) **किया करते थे और** (वो जिन्नात बड़े सरकश और शरीर थे मगर) **उन के संभालने वाले हम** (थे इसलिए वो कोई शरारत नहीं कर सकते) **थे**(82)।

नोटः- दो आदमी हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के पास आए उनमें एक बकरियों वाला था दूसरा खेती वाला था। खेती वाले ने बकरी वाले पर यह दावा किया कि उसकी बकरियां रात को छूट कर मेरे खेत में घुस गईं और खेत को बिल्कुल साफ़ कर दिया कुछ नहीं छोड़ा दूसरे ने इक़रार कर लिया होगा और फ़सल की क़ीमत बकरियों के बराबर होगी इसलिए हज़रत दावूद अलैहिस्सलाम ने यह फ़ैसला सुना दिया कि बकरियों वाला अपनी सारी बकरियां खेत वाले को देदे। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने यह फ़ैसला सुन कर कहा कि मैं अगर फ़ैसला करता तो इस तरह

करता कि कुछ वक़्त के लिए बकरियां खेत वाले को दी जाएं कि वो उन के दूध और ऊन से फ़ाइदा उठाता रहे और खेत की ज़मीन बकरियों वाले के हवाले की जाए कि उसमें खेती कर के फ़सल उगाए जब यह खेत उस हालत पर आजाए जिस पर बकरियों ने खाया था तब खेत खेत वाले को दिलवा दें और बकरियां बकरी वाले को।

हज़रत दावूद अलैहिस्सलाम ने इस फ़ैसले को पसन्द करके कहा कि बस अब ये ही फ़ैसला रहना चाहिए हालांकि उन का फ़ैसला भी सही था मगर इसमें दोनों की भलाई थी।

وَ اَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّیْ مَسَّنِیَ الضُّرُّ وَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَ ﴿۸۳﴾ۚۖ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّ
اٰتَیْنٰهُ اَهْلَهٗ وَ مِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَ ذِكْرٰى لِلْعٰبِدِیْنَ ﴿۸۴﴾ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِدْرِیْسَ وَ ذَا الْكِفْلِ ؕ
كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۸۵﴾ۚۖ وَ اَدْخَلْنٰهُمْ فِیْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۸۶﴾

आयत न० 83 से 86

और अय्यूब (अलैहिस्सलाम) **के क़िस्से का ज़िक्र कीजिए जब कि उन्होंने** (सख़्त बीमारी की हालत में) **अपने रब को पुकारा कि मुझ को यह तकलीफ़ पहुंच रही है और आप सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले हैं** (तो अपनी रहमत से मेरी यह तकलीफ़ दूर कर दीजिए)(83) **तो हम ने उन की दुआ क़ुबूल की और उन को जो तकलीफ़ थी उस को दूर कर दिया और** (बिना उन के मांगे ही) **हम ने उन के घर वाले भी दे दिये** (यानी औलाद जो उन से बिछड़ गये थे या मर गये थे इस तरह से कि वो उन के पास आगये या इतने ही और पैदा हो गये) **और उन के साथ** (गिनती में) **उन के बराबर और भी** (दिये यानी जितनी औलाद पहले थी उस के बराबर और भी दे दिये चाहे उनके ही या उन की औलाद के) **अपनी ख़ास रहमत की वजह से और इबादत करने वालों के लिए एक यादगार रखने के लिए**(84) **और इस्माईल और इद्रीस और ज़ुल किफ़्ल** (अलैहिमुस्सलाम के क़िस्से) **का ज़िक्र कीजिए, ये सब** (अल्लाह के हुक्मों पर जमे रहने वाले) **सब्र करने वाले लोगों में से थे**(85) **और हमने उन** (सब) **को अपनी** (ख़ास) **रहमत में दाख़िल कर लिया था, बेशक ये** (सब) **नेक लोगों में थे**(86)

नोटः- हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के सब्र को आज़माया गया और उन को माल व औलाद से महरूम होने के अलावा ऐसी बीमारी लगी कि लोग पास आते हुए घबराऐं। फिर जब दुआ क़ुबूल हुई तो

एक दम ऐसे अच्छे हो गये कि जब उन की बीवी उन के पास आईं तो पहचान न सकीं और माल व औलाद भी वापस मिल गईं।

وَ ذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِى الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ
اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَ نَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَ كَذٰلِكَ نُـْجِى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾

आयत न० 87 से 88

और मच्छली वाले (पैग़म्बर यानी यूनुस अलैहिस्सलाम के क़िस्से) **का ज़िक्र कीजिए जब वो** (अपनी क़ौम से ईमान न लाने पर) **नाराज़ होकर चल दिये** (और उन की क़ौम पर से अज़ाब टल जाने के बाद भी ख़ुद वापस न आए और इस सफ़र के लिए हमारे हुक्म का इन्तिज़ार नहीं किया) **और उन्होंने** (अपनी इल्मी राय से) **यह समझा कि हम** (इस चले जाने में) **उन की कोई पकड़ नहीं करेंगे बस** (जब पकड़ हुई तो) **उन्होंने अन्धेरों में पुकारा** (एक अन्धेरा मच्छली के पेट का दूसरा दरिया के पानी का और तीसरा रात का बस इन अन्धेरों में दुआ की) **कि आप के सिवा कोई माबूद नहीं आप** (सब ऐबों से) **पाक हैं मैं बेशक क़ुसूरवार हूं** (बस मेरी ग़लती मुआफ़ करके इस मुसीबत से छुटकारा दीजिए)(87) **सो हम ने उन की दुआ क़ुबूल की और उन को उस घुटन से आज़ादी दी, और हम इसी तरह** (और) **ईमान वालों को** (भी मुसीबत और ग़म से) **छुटकारा दिया करते हैं** (जब कि ग़म और मुसीबत में और रखना ज़रूरी न हो)(88)।

नोटः- यूनुस अलैहिस्सलाम के बहुत समझाने के बाद जब उन की क़ौम ईमान नहीं लाई तो आप तीन दिन बाद अज़ाब आने की ख़बर सुनाकर उस बस्ती से चले गये। क़ौम अज़ाब की निशानी देख कर डर गई और सच्चे दिल से सब ने तौबा की। यूनुस अलैहिस्सलाम को क़ौम के तौबा करने और क़ुबूल हो जाने का पता न चला और अज़ाब न आने पर झूटा साबित हो जाने के डर से वो वापस नहीं आए इस ग़लती पर कि हुक्म न आने से पहले जगह क्यों छोड़ी बस पकड़ हुई चूंकि इस चले जाने को उन्होंने अपनी इल्मी राय से जाइज़ समझा इसलिए वही का इन्तिज़ार न किया लेकिन चूंकि वही की उम्मीद तक वही का इन्तिज़ार पैग़म्बरों को करना चाहिए और यह बात उनसे छूट गई इसलिए उन को यह परीशानी सामने आई कि रास्ते में उन को कोई दरिया मिला और वहां किशती में सवार हुए, किशती चलते-चलते रूक गई यूनुस अलैहिस्सलाम समझ

गये कि मेरा बिना इजाज़त चले आना नापसन्द हुआ इस की वजह से यह किशती रूकी। किशती वालों से कहा कि मुझ को दरिया में डाल दो वो तैयार न हुए बस पर्ची डाली गई तब भी उन्हीं का नाम निकला आख़िर उन को दरिया में डाल दिया और अल्लाह के हुक्म से उन को एक मच्छली ने निगल लिया फिर उन्होंने दुआ की और उस मुसीबत से छुटकारा मिला कि मच्छली ने उन को सही सलामत उगल दिया फिर तन्दरूस्त होने के बाद क़ौम की तरफ़ वापस आए और नबी की हैसियत से काम संभाल लिया।

وَ زَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِىْ فَرْدًا وَّ اَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٨٩﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۫ وَ وَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَ
اَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَ يَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّ رَهَبًا ؕ وَ كَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿٩٠﴾ وَ
الَّتِىْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَ جَعَلْنٰهَا وَ ابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾

आयत न० 89 से 91

और ज़िकरिया (अलैहिस्सलाम के क़िस्से) **का ज़िक्र कीजिए जब कि उन्होंने अपने रब को पुकारा कि या रब मेरे मुझ को लावारिस न रखना** (यानी मुझ को बेटा दीजिए जो मेरा वारिस हो) **और** (यूं तो) **सब वारिसों से अच्छे** (यानी असली वारिस) **आप ही हैं** (क्योंकि एक दिन बेटा भी न रहेगा लेकिन इस वारिस से कुछ दीनी और दुनिया के फ़ाइदे हो जाएंगे इसलिए इस की चाहत है)(89) **सो हम ने उन की दुआ कुबूल कर ली और हमने उन को याहया** (बेटा) **दिया और उन के लिए उनकी बीवी को भी** (जो बांझ थी) **औलाद के क़ाबिल कर दिया, ये सब** (पैग़म्बर जिनका इस सूरत में ज़िक्र हुआ है) **नेक कामों में दौड़ते थे और उम्मीद व डर के साथ हमारी इबादत किया करते थे, और** (उन के दिल) **हमारे सामने झुके रहते थे**(90) **और उन बीबी** (मरयम के क़िस्से) **का भी ज़िक्र कीजिए जिन्होंने अपनी आबरू को** (मर्दों से) **बचाया** (निकाह से भी और नाजाइज़ से भी) **फिर हम ने उनमें** (जिबरील अलैहिस्सलाम के वास्ते से) **अपनी रूह फूंक दी** (जिससे उन को बिना शौहर के बच्चा रह गया) **और हम ने उन को और उनके बेटे** (ईसा अलैहिस्सलाम) **को दुनिया जहान वालों के लिए** (अपनी कुदरत की) **निशानी बना दिया** (कि उन को देख सुन कर समझलें कि अल्लाह तआला हर चीज़ की कुदरत रखता है वो बिना बाप के भी औलाद पैदा कर सकता है और बिना मां और बाप के भी जैसा कि आदम अलैहिस्सलाम)(91)

اِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّ اَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿۹۲﴾ وَ تَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ؕ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿۹۳﴾
فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَ اِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿۹۴﴾ وَ حَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَاۤ
اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿۹۵﴾ حَتّٰۤى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَ مَاْجُوْجُ وَ هُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿۹۶﴾ وَ اقْتَرَبَ الْوَعْدُ
الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿۹۷﴾ اِنَّكُمْ وَ
مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ؕ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿۹۸﴾ لَوْ كَانَ هٰۤؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ؕ وَ كُلٌّ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۹۹﴾ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّ هُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰۤى ۙ اُولٰٓئِكَ عَنْهَا
مُبْعَدُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ وَ هُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ
وَ تَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ يَوْمَ نَطْوِي السَّمَآءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ؕ
كَمَا بَدَاْنَاۤ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿۱۰۴﴾ وَ لَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ
الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿۱۰۵﴾

आयत न० 92 से 105

ऐ लोगों (ऊपर जो पैग़म्बरों का तरीक़ा व तौहीद के अक़ीदे का पता चला है) **यह तुम्हारा तरीक़ा है** (जिस पर तुम को रहना ज़रूरी है और) **वो एक ही तरीक़ा** (है जिसमें सब नबी और शरीअ़त एक) **है, और** (मतलब इस तरीक़े का यह है कि) **मैं तुम्हारा रब हूं तो तुम मेरी इबादत किया करो**(92) **और** (जब यह साबित हो चुका कि सारे पैग़म्बरों और सभी आसमनी किताबों और शरीअतों ने इसी तरीक़े की दावत दी है तो लोगों को चाहिए था कि वो भी इसी तरीक़े पर रहते मगर ऐसा न किया बल्कि) **उन लोगों ने अपने दीन को आपस में टुकड़े-टुकड़े कर लिया,** (मगर इस की सज़ा देखेंगे क्योंकि) **सब हमारे पास आने वाले हैं**(93) **फिर** (आने के बाद हर एक को उस के कामों का बदला मिलेगा तो) **जो आदमी नेक काम करता होगा और वो ईमान वाला भी होगा तो उस की मेहनत बेकार जाने वाली नहीं और हम उस** (के कामों) **को लिख लेते हैं** (जिसमें भूल नहीं हो सकती और उसी लिखे हुए के हिसाब से उसे सवाब मिलेगा)(94) **और** (अल्लाह की तरफ़ लौटने के लिए एक दिन तय है यानी क़ियामत का दिन उससे पहले कोई नहीं लौटता ये ही वजह है कि) **हम जिन बस्तियों** (के रहने वालों) **को** (अज़ाब या मौत से) **हलाक कर चुके हैं वो** (दुनिया में) **फिर लौट कर नहीं आ सकते** (यानी क़ियामत तक नहीं लौटेंगे)(95) **यहां तक कि जब** (वो

आने वाला वक़्त आजाएगा जिस का सामान ऐसे शुरू होगा कि) **याजूज माजूज** (जिन का रास्ता दीवार से रूका हुआ है वो) **खोल दिये जाएंगे और वो** (बहुत ज़्यादा होने की वजह से) **हर ऊंचाई** (टीले और पहाड़) **पर उतरे हुए** (दिखाई देते) **होंगे(96) और** (अल्लाह की तरफ़ लौटने का सच्चा) **वादा नज़दीक आ पहुंचा होगा तो बस फिर अचानक यह हालत हो जाएगी कि काफ़िरों की आंखें फटी की फटी रह जाएंगी,** (और वो यह कहेंगे कि) **हाय हमारी बद नसीबी हम इससे भूल में थे** (फिर कुछ सोच कर कहेंगे कि इस को भूल तो जब कहा जा सकता कि किसी ने हम को बताया न होता) **बल्कि** (असलीयत यह है कि) **हम ही क़ुसूरवार थे(97)** (ऐ मुशरिको) **बेशक तुम और जिस को तुम अल्लाह के सिवा पूज रहे हो सब जहन्नम में जाओगे,** (और) **तुम सब इसमें दाख़िल होंगे** (उसमें वो पैग़म्बर और फ़रिशते नहीं जाएंगे जिन को दुनिया में कुछ मुशरिकों ने ख़ुदा और माबूद बना लिया था क्योंकि वो इसके हक़दार नहीं और न उनका कुछ क़ुसूर है)**(98) अगर ये** (तुम्हारे माबूद) **सचमुच माबूद होते तो उस** (जहन्नम) **में क्यों जाते, और** (जाना भी ऐसा कि कुछ दिनों का नहीं बल्कि) **सब** (इबादत करने वाले और माबूद) **इसमें सदा रहेंगे(99)** (और) **उसमें वो चिल्लाएंगे और वहां** (अपने शोर में) **किसी की कोई बात नहीं सुन सकेंगे(100)** (मगर) **जिन लोगों के लिए हमारी तरफ़ से भलाई लिखी जा चुकी है** (यानी नेक मोमिन) **वो लोग उस** (दोज़ख़) **से दूर रक्खे जाएंगे(101)** (इतना दूर) **कि उस की आहट भी न सुनेंगे** (क्योंकि ये लोग जन्नत में होंगे और जन्नत दोज़ख़ में बहुत दूरी है)**, और वो लोग अपनी मन चाही चीज़ों में सदा रहेंगे(102)** (और) **उन को** (क़ियामत की) **बड़ी घबराहट दुखी न करेगी और** (क़ब्र से निकलते ही) **फ़रिशते उन को लेने आएंगे,** (और कहेंगे) **यह है तुम्हारा वो दिन जिस का तुम से वादा किया जाता था(103)** (और वो दिन याद रक्खो) **जिस दिन हम** (पहले सूर फूंकने के बाद) **आसमानों को इस तरह लपेट देंगे जिस तरह लिखे हुए काग़ज़ को लपेट दिया जाता है,** (और) **हमने जिस तरह पहली बार पैदा करने के वक़्त** (हर चीज़ को) **शुरू किया था इसी तरह** (आसानी से) **उस को दोबारा पैदा कर देंगे, यह हमारे ज़िम्मे वादा है, हम ज़रूर** (इस को) **पूरा करेंगे(104) और** (ऊपर जो नेक बन्दों से सवाब व नेमत का वादा हुआ है वो बहुत पुराना है सो) **हम** (सब आसमानी) **किताबों में नसीहत के बाद लिख चुके हैं कि उस ज़मीन** (यानी जन्नत) **के मालिक मेरे नेक बन्दे होंगे(105)**

नोटः- याजूज माजूज एक क़ौम है जो दुनिया के किसी ऐसे हिस्से में आबाद है जहां तक लोगों की

पहुंच नहीं क़ियामत के नज़दीक ज़माने में वो खोल दिये जाएंगे और दुनिया में बड़ा फ़साद मचाएंगे इस का क़िस्सा सूरत कहफ़ में आया है वहां देख लिया जाए।

اِنَّ فِیۡ ہٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوۡمٍ عٰبِدِیۡنَ ﴿۱۰۶﴾ وَ مَاۤ اَرۡسَلۡنٰکَ اِلَّا رَحۡمَۃً لِّلۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۱۰۷﴾ قُلۡ اِنَّمَا یُوۡحٰۤی اِلَیَّ اَنَّمَاۤ اِلٰـہُکُمۡ
اِلٰہٌ وَّاحِدٌ ۚ فَہَلۡ اَنۡتُمۡ مُّسۡلِمُوۡنَ ﴿۱۰۸﴾ فَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَقُلۡ اٰذَنۡتُکُمۡ عَلٰی سَوَآءٍ ؕ وَ اِنۡ اَدۡرِیۡۤ اَقَرِیۡبٌ اَمۡ بَعِیۡدٌ مَّا
تُوۡعَدُوۡنَ ﴿۱۰۹﴾ اِنَّہٗ یَعۡلَمُ الۡجَہۡرَ مِنَ الۡقَوۡلِ وَ یَعۡلَمُ مَا تَکۡتُمُوۡنَ ﴿۱۱۰﴾ وَ اِنۡ اَدۡرِیۡ لَعَلَّہٗ فِتۡنَۃٌ لَّکُمۡ وَ مَتَاعٌ اِلٰی
حِیۡنٍ ﴿۱۱۱﴾ قٰلَ رَبِّ احۡکُمۡ بِالۡحَقِّ ؕ وَ رَبُّنَا الرَّحۡمٰنُ الۡمُسۡتَعَانُ عَلٰی مَا تَصِفُوۡنَ ﴿۱۱۲﴾ ع

आयत न० 106 से 112

बेशक इस (क़ुरआन या उस के हिस्से यानी इस सूरत) **में काफ़ी नसीहत है उन लोगों के लिए जो इबादत करने वाले हैं** (और जो सरकशी करने वाले हैं हिदायत तो उन के लिए भी है मगर उनमें चाहत नहीं इसलिए उन को नफ़ा नहीं होता)(106) **और** (ऐ पैग़म्बर) **हम ने आप को सारे जहानों के लिए रहमत बनाकर भेजा** (है वो रहमत और महरबानी ये ही है कि लोग पैग़म्बर की बातों को मानें और हिदायत का फ़ाइदा उठाएं और जो न माने उस की ग़लती) **है**(107) **आप उन लोगों से** (दोबारा) **कह दीजिए कि मेरे पास तो ये ही वही आई है कि तुम्हारा माबूद तो एक ही माबूद है तो** (इस की सच्चाई साबित हो जाने के बाद) **अब भी तुम मानते हो** (या नहीं यानी अब तो मान लो)(108) **फिर भी अगर ये लोग** (इसके मानने से) **मुंह मोड़ें तो आप कह दीजिए कि मैं तुम को साफ़-साफ़ ख़बर सुना चुका हूं** (दीन की सच्चाई की भी और इसके इनकार पर जो सज़ा मिलेगी उस की भी), **और** (अगर इस सज़ा के बारे में तुम को कुछ शक है तो समझ लो कि सज़ा का मिलना तो यक़ीनी है मगर) **मैं यह नहीं जानता कि जिस** (सज़ा) **का तुम से वादा हुआ है वो नज़दीक** (ही होने वाली) **है या दूर** (ज़माने में होने वाली है लेकिन उस सज़ा का होना ज़रूरी) **है**(109) **अल्लाह तआ़ला को** (तुम्हारी) **पुकार कर कही हुई बात का भी पता है और जो तुम दिल में रखते हो उस का भी पता है**(110) **और** (अ़ज़ाब में देरी से धोके में न रहना यह देरी भी किसी ख़ास वजह से हो रही है) **मैं नहीं जानता** (कि वो वजह क्या है हां इतना कह सकता हूं कि) **शायद** (यह अज़ाब में देरी) **तुम्हारे लिए इम्तिहान हो** (कि शायद सबक़ लेकर ईमान ले आएं) **और एक** (थोड़े) **वक़्त** (यानी मौत तक) **फ़ाइदा पहुंचाना हो** (कि मज़ों में लगे रहें और

अज़ाब बढ़ता चला जाए)(111) **पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **ने** (जब देखा कि इन बातों से हिदायत नहीं हुई तो अल्लाह तआला की इजाज़त से) **कहा कि या रब मेरे** (हमारे और हमारी क़ौम के बीच) **फ़ैसला कर दीजिए** (जो कि सदा) **इन्साफ़ का** (हुआ करता है मतलब यह कि मुसलमानों से जो मदद के वादे हैं वो पूरे कर दीजिए) **और** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काफ़िरों से यह भी कहा कि) **हमारा रब बड़ा महरबान है जिससे उन बातों के मुक़ाबिले में मदद चाही जाए जो तुम बनाया करते हो** (कि मुसलमान जल्दी मिलयामेट हो जाएंगे यानी हम उसी महरबान रब से तुम्हारे मुक़ाबिले में मदद चाहते हैं)(112)।

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं अल्लाह की भेजी हुई रहमत हूं ताकि (अल्लाह के हुक्म मानने वाली) एक क़ौम को सरबलन्द कर दूं और दूसरी क़ौम (जो अल्लाह का हुक्म मानने वाली नहीं उन को) पस्त कर दूं।

इससे मालूम हुआ कि जिहाद करना भी ऐन रहमत है। (इब्ने कसीर)

22-सूरत-हज्ज

इस मदनी सूरत में '78' आयतें और '10' रूकू हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَیْءٌ عَظِيْمٌ ۝١ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّاۤ
اَرْضَعَتْ وَ تَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَ تَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَ مَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَ لٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ
شَدِيْدٌ ۝٢

आयत नं० 01 से 02

ऐ लोगों अपने रब (के गुस्से) **से डरो** (और ईमान लाओ और कहना मानो क्योंकि) **बेशक क़ियामत का भौंचाल बड़ी भारी चीज़ होगी** (जिस का आना ज़रूरी है उस दिन से बचने की अब फ़िक्र करो जिस का तरीक़ा परहेज़गारी है)(1) **जिस दिन तुम लोग उस** (भौंचाल) **को देखोगे उस दिन** (यह हाल होगा कि) **सभी दूध पिलाने वाली** (डर की वजह से) **अपने दूध पीते** (बच्चे) **को भूल जाएंगी और सभी हमल वाली अपना बच्चा** (दिन पूरे होने से पहले) **गिरा देंगी और तुम्हें लोग नशे की सी हालत में दिखाई देंगे हालांकि वो नशे में नहीं होंगे** (और वहां नशे की चीज़ें होंगी ही नहीं) **बल्कि अल्लाह का अज़ाब ही सख़्त चीज़ है** (जिस के डर की वजह से उन की हालत नशे वाले की सी हो जाएगी)(2)।

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِی اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّ يَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ۝٣ كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ
فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَ يَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝٤ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِیْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ
تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّ غَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ وَ نُقِرُّ فِی
الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ۚ وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَ مِنْكُمْ
مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ وَ تَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا

الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَ رَبَتْ وَ اَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيْجٍ ﴿٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَ اَنَّهٗ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَ اَنَّهٗ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ﴿٦﴾ وَّ اَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ﴿٧﴾ وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ
يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّ لَا هُدًى وَّ لَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۙ﴿٨﴾ ثَانِيَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِي الدُّنْيَا
خِزْيٌ وَّ نُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٩﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٠﴾ ع

आयत नं० 03 से 10

और कुछ आदमी ऐसे हैं कि अल्लाह तआ़ला के बारे में (यानी उस की हस्ती या ख़ूबियों या कामों के बारे में) **बे जाने बूझे झगड़ा करते हैं और हर सरकश शैतान के पीछे चल पड़ते** (हैं यानी उसके बहकाए में आ जाते) **हैं(3) जिस के बारे में** (अल्लाह के यहां से) **यह बात लिखी जा चुकी है** (और तय हो चुकी है) **कि जो आदमी उससे वास्ता रक्खेगा** (यानी उसके पीछे चलेगा) **तो उस का काम ही यह है कि वो उस को** (सही रास्ते से) **गुमराह कर देगा और उस को दोज़ख़ के अज़ाब का रास्ता दिखा देगा(4) ऐ लोगो अगर तुम** (क़ियामत के दिन) **दोबारा ज़िन्दा होने के बारे में शक में हो तो** (ज़रा सोचो कि) **हमने** (पहली बार) **तुम को मिट्टी से बनाया** (क्योंकि जिस ख़ुराक से मनी बनती है वो मिट्टी से पैदा होती है) **फिर मनी से फिर जमे हुए ख़ून से फिर बोटी से कि** (कुछ) **पूरी होती है** (कि उसमें पूरे हिस्से बन जाते हैं) **और** (कुछ) **अधूरी भी** (होती है कि कुछ हिस्से अधूरे रह जाते हैं और ऐसा इसलिए बनाया) **ताकि हम तुम्हारे सामने** (अपनी क़ुदरत) **दिखा दें** (और इसी से साबित है कि दोबारा पैदा करने की भी क़ुदरत है)**, और हम मां के पेट में जिस** (बच्चे) **को चाहते हैं एक ज़माने तक** (यानी पैदा होने के वक़्त तक) **ठहराए रखते हैं** (और जिस को ठहराना नहीं चाहते वहां बच्चा गिर जाता है) **फिर** (उस तय ज़माने के बाद) **हम तुम को बच्चा बना कर** (मां के पेट से) **बाहर लाते हैं फिर** (उस के बाद तीन क़िस्में हो जाती हैं एक क़िस्म यह कि तुम में से कुछ को जवानी तक मुहलत देते हैं) **ताकि तुम अपनी भरी जवानी** (की उम्र) **तक पहुंच जाओ, और कुछ तुम में वो भी हैं जो** (जवानी से पहले ही) **मर जाते हैं** (यह दूसरी क़िस्म हुई) **और कुछ तुम में वो हैं जो निकम्मी उम्र** (यानी ज़्यादा बुढ़ापे) **तक पहुंचा दिये जाते हैं जिस का असर यह है कि एक चीज़ जान कर फिर अन्जान हो जाते** (हैं जैसा कि अक्सर बूढ़ों को देखा गया है कि अभी एक बात बताई और अभी फिर पूछ रहे हैं यह तीसरी क़िस्म हुई ये सब हालतें भी अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत की निशानियां) **हैं, और** (दूसरी दलील

यह है कि) **तुम ज़मीन को देखते हो कि सूखी** (पड़ी) **है फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो उभरती और फूलती है और हर क़िस्म** (यानी तरह-तरह) **की अच्छी-अच्छी चीज़ें उगाती है(5)** (और) **यह** (सब कुछ) **इसलिए हुआ कि अल्लाह तआ़ला ही का वजूद** (पूरा और) **हक़ है और वो ही बेजानों में जान डालता है और वो हर चीज़ की क़ुदरत रखता है(6) और** (इसलिए हुआ कि) **क़ियामत आने वाली है उसमें ज़रा शक नहीं और अल्लाह तआ़ला** (क़ियामत में) **क़ब्र वालों** (यानी मुर्दों) **को दोबारा पैदा कर देगा(7) और कुछ आदमी ऐसे होते हैं कि अल्लह तआ़ला के बारे में बिना जानकारी** (यानी ज़रूरी इल्म) **और बिना दलील और बिना रौशन किताब के झगड़ा करते हैं(8)** (और बड़े आलिमों की बात मानने से) **घमन्ड करते** (हुए झगड़ते) **हैं ताकि** (दूसरे लोगों को भी) **अल्लाह की राह से** (यानी सच्चे दीन से) **गुमराह कर दें, ऐसे आदमी के लिए दुनिया में रूसवाई है और क़ियामत के दिन हम उस को जलती आग का अज़ाब चखा देंगे(9)** (और उससे कहा जाएगा कि) **यह तेरे हाथों किये हुए कामों का बदला है और यह बात तय है कि अल्लाह तआ़ला** (अपने) **बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं** (बस तुझ को बिना जुर्म सज़ा नहीं दी गई)(10)।

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसी उम्र से पनाह मांगी है जिस में सोच समझ और अक़्ल जाती रहे।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ِۨاطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ِۨانْقَلَبَ عَلٰى
وَجْهِهٖ ۫ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۱﴾ يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا
يَنْفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿۱۲﴾ يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ؕ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿۱۳﴾ اِنَّ
اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿۱۴﴾ مَنْ
كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ
يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿۱۵﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍ ۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ﴿۱۶﴾

आयत नं० 11 से 16

और कुछ आदमी अल्लाह की इबादत (इस तरह) **करते हैं जैसे** (कोई किसी चीज़ के) **किनारे पर** (खड़ा हो और मौक़ा पाकर चल देने पर तैयार) **हो, फिर अगर उस को कोई** (दुनिया

का) **नफ़ा पहुंच गया तो उस की वजह से** (इस्लाम पर) **जम गया, और अगर उस को** (किसी परीशानी से) **आज़माया गया तो मुंह उठा कर** (कुफ़्र की तरफ़) **चल दिया** (जिससे) **दुनिया व आख़रत दोनो खो बैठा, ये ही है खुला नुक़सान**(11) (दुनिया का नुक़सान तो आज़माने को मुसीबत का आना और आख़रत का नुक़सान यह हुआ कि इस्लाम और) **अल्लाह को छोड़ कर उसी चीज़ की इबादत करने लगा जो** (इतनी मजबूर और बेबस है कि) **न उस को नुक़सान पहुंचा सकती है न नफ़ा पहुंचा सकती है** (यानी उस की इबादत न करो तो कोई नुक़सान न पहुंचा सके और करो तो नफ़ा न पहुंचा सके), **यह परले दर्जे की गुमराही है**(12) (सिर्फ़ ये ही नहीं कि उस की इबादत से कोई नफ़ा न पहुंचे बल्कि उल्टा नुक़सान है क्योंकि) **वो ऐसे की इबादत कर रहा है कि उस का नुक़सान उसके नफ़े से ज़्यादा क़रीब है, ऐसा मददगार भी बुरा और ऐसा साथी भी बुरा** (जो किसी तरह किसी हाल किसी के काम न आए)(13) **बेशक अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किये** (जन्नत के) **ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी,** (और अल्लाह जिस आदमी या क़ौम को कोई सवाब या अज़ाब देना चाहे उस को कोई रोकने वाला नहीं क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला** (बड़ी क़ुदरत वाला है) **जो इरादा कर लेता है उस को पूरा करता है**(14) **जो आदमी** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मुख़ालफ़त और दुशमनी करके) **यह सोचता हो कि** (मैं हावी हो जाऊंगा और आप के दीन की तरक़्क़ी को रोक दूंगा और यह कि) **अल्लाह तआ़ला रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **की** (और आप के दीन की) **दुनिया व आख़रत में मदद न करेगा तो उस को चाहिए कि एक रस्सी आसमान तक तान ले** (और आसमान से बान्ध दे) **फिर** (उस रस्सी से अगर आसमान पर पहुंच सके तो पहुंच जाए ताकि) **उस वही को रोक दे** (और ऐसा कोई कर नहीं सकता) **तो फिर सोचना चाहिए कि उस की** (यह) **कोशिश** (जिससे बिल्कुल मजबूर है) **उस के ग़ुस्से की चीज़ को** (यानी वही को) **रोक सकती है**(15) **और हम ने इस** (क़ुरआन) **को इसी तरह उतारा है** (कि इसमें हमारे इरादे और क़ुदरत के सिवा किसी का दख़ल नहीं) **जिसमें** (दीन की सच्चाई की) **खुली-खुली निशानियां हैं और अल्लाह तआ़ला ही जिस को चाहता है हिदायत करता है**(16)

नोटः- इस्लाम के दुशमन यह चाहते हैं कि अल्लाह तआ़ला अपने पैग़म्बर और उसके दीन की मदद न करे और यह तो जभी हो सकता है जबकि ख़ुदा न करे पैग़म्बर से पैग़म्बरी छिन जाए क्योंकि अल्लाह तआ़ला अपने जिस बन्दे को पैग़म्बर बनाता है उसकी मदद तो दुनिया व आख़रत में

करने का अल्लाह की तरफ़ से वादा है तो जो आप के दीन की तरक़्क़ी को रोकना चाहता है उस को चाहिए कि वही को रोक दे यानी पैग़म्बरी छिनवा दे और यह हो नहीं सकता तो अल्लाह की मदद और दीन की तरक़्क़ी भी रोकी नहीं जा सकती।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ وَالنَّصَارَىٰ وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۖ إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١٧﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَ
الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ وَكَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ ۖ وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ
الْعَذَابُ ۗ وَمَنْ يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُكْرِمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۩ ﴿١٨﴾ هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ۖ
فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِنْ نَارٍ ۖ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ﴿١٩﴾ يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي
بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ﴿٢٠﴾ وَلَهُمْ مَقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ ﴿٢١﴾ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَ
ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٢٢﴾ إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٢٣﴾ وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ وَ
هُدُوا إِلَىٰ صِرَاطِ الْحَمِيدِ ﴿٢٤﴾

आयत नं० 17 से 24

इसमें कोई शक नहीं कि मुसलमान और यहूदी और साबी और ईसाई और मजूसी और मुशरिक लोग अल्लाह तआ़ला इन सब के बीच में क़ियामत के दिन (खुला) **फ़ैसला** (कर देगा कि मुसलमानों को जन्नत में और सब क़िस्म के काफ़िरों को जहन्नम में दाख़िल) **कर देगा, बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को जानता है(17) क्या तुम यह बात नहीं जानते कि अल्लाह तआ़ला के सामने** (अपनी-अपनी हालत के हिसाब से) **सब सर झुकाते हैं जो कि आसमानों और जो ज़मीन में हैं और सूरज और चान्द और तारे और पहाड़ और पेड़ और जानवर और** (सभी के ताबेदार होने के बावजूद इन्सान जो ख़ास दर्जे की अक़्ल भी रखता है वो सब के सब ताबेदार नहीं बल्कि) **बहुत से** (तो) **आदमी भी** (ताबेदारी करते हैं), **और बहुत से ऐसे हैं जो अज़ाब के हक़दार हैं, और** (यह सच है कि) **जिस को अल्लाह ज़लील करे** (कि उस को हिदायत की तौफ़ीक़ न हो) **उस का कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं** (और) **अल्लाह तआ़ला** (की मर्ज़ी कि

अपनी हिकमत से) **जो चाहे करे(18)** (जिन का ज़िक्र ऊपर आयत में हुआ है) **ये दो फ़रीक़ हैं** (एक मोमिन दूसरा काफ़िर फिर काफ़िरों की कई क़िस्में हैं यहूदी, ईसाई, साइब, मजूसी और बुत परस्त) **जिन्होंने अपने रब के बारे में आपस में झगड़ा किया** (इस झगड़े का फैसला क़ियामत में इस तरह होगा कि) **जो लोग काफ़िर थे उन के** (पहनने के) **लिए आग के कपड़े तैयार किये जाएंगे** (यानी आग उनके पूरे बदन को इस तरह घेरे होगी जैसी कपड़े), **और उन के सर के ऊपर से तेज़ गर्म पानी छोड़ा जाएगा(19) जिससे उनके पेट की चीज़ें** (यानी आन्तें) **और खालें सब** (गल जाएंगी यानी यह खौलता हुआ तेज़ पानी कुछ पेट के अन्दर चला जाएगा जिससे आन्तें) **गल जाएंगी(20) और उन के** (मारने के) **लिए हथौड़े होंगे** (और उस मुसीबत से कभी छुटकारा न होगा)(21) **वो लोग जब** (दोज़ख़ में) **तंग आकर उससे बाहर निकलना चाहेंगे तो फिर उसी में धकेल दिये जाएंगे, और कहा जाएगा कि जलने का अज़ाब** (सदा के लिए) **चखते रहो** (कभी निकलना नसीब न होगा)(22) **बेशक अल्लाह तआ़ला उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये** (जन्नत के) **ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी उन को वहां सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे, और वहां कपड़े उनके रेशम के होंगे(23) और** (यह सब इनआम व इज़्ज़त इस वजह से कि दुनिया में) **उन को पाक कलमे** (के यक़ीन करने) **की हिदायत हो गई थी और उन को उस** (अल्लाह) **के रास्ते की हिदायत हो गई थी जो तारीफ़ का हक़दार** (है वो रास्ता इस्लाम) **है(24)।**

नोटः- सोने का ज़ेवर और रेशम का कपड़ा पहनने की दुनिया में तो सिर्फ़ औरतों को इजाज़त है मर्दो को नहीं मगर जन्नत में मर्दो को भी इजाज़त होगी।

اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَ يَصُدُّوۡنَ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَـرَامِ الَّذِىۡ جَعَلۡنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ۨ الۡعَاكِفُ فِيۡهِ وَ
الۡبَادِ‌ ؕ وَمَنۡ يُّرِدۡ فِيۡهِ بِاِلۡحَـادٍۢ بِظُلۡمٍ نُّذِقۡهُ مِنۡ عَذَابٍ اَلِيۡمٍ ۞ ۲۵ وَاِذۡ بَوَّاۡنَا لِاِبۡرٰهِيۡمَ مَكَانَ الۡبَيۡتِ اَنۡ لَّا
تُشۡرِكۡ بِىۡ شَيۡـئًا وَّ طَهِّرۡ بَيۡتِىَ لِلطَّآئِفِيۡنَ وَالۡقَآئِمِيۡنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوۡدِ ۞ ۲۶ وَاَذِّنۡ فِى النَّاسِ بِالۡحَجِّ يَاۡتُوۡكَ
رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاۡتِيۡنَ مِنۡ كُلِّ فَجٍّ عَمِيۡقٍ ۞ ۲۷ لِّيَشۡهَدُوۡا مَنَافِعَ لَهُمۡ وَيَذۡكُرُوا اسۡمَ اللّٰهِ فِىۡۤ
اَيَّامٍ مَّعۡلُوۡمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمۡ مِّنۡۢ بَهِيۡمَةِ الۡاَنۡعَامِ‌ ۚ فَكُلُوۡا مِنۡهَا وَاَطۡعِمُوا الۡبَآئِسَ الۡفَقِيۡرَ ۞ ۲۸ ثُمَّ لۡيَـقۡضُوۡا
تَفَثَهُمۡ وَلۡيُوۡفُوۡا نُذُوۡرَهُمۡ وَلۡيَطَّوَّفُوۡا بِالۡبَيۡتِ الۡعَتِيۡقِ ۞ ۲۹

आयत नं० 25 से 29

बेशक जो लोग काफ़िर हुए और (मुसलमानों को) **अल्लाह के रास्ते से और ख़ाना काबा से रोकते हैं** (ताकि मुसलमान उमरा अदा न कर सकें जब कि) **इसको हम ने सभी लोगों के वास्ते बनाया है कि इसमें सब बराबर हैं इस** (हरम के पास) **में रहने वाले भी और बाहर से आने वाले** (मुसाफ़िर) **भी, और जो कोई इसमें** (यानी हरम शरीफ़ में) **ज़ुल्म के साथ कोई बेदीनी का काम करने का इरादा करेगा तो हम उस आदमी को दर्दनाक अज़ाब** (का मज़ा) **चखाएंगे**(25) **और** (उस बात को याद दिलाइये) **जब कि हम ने इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **को ख़ाना काबा की जगह बता दी** (क्योंकि उस वक़्त ख़ाना काबा बना हुआ न था और हुक्म दिया) **कि** (इस मकान को इबादत के लिए तैयार करो और इस इबादत में) **मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न करना** (यह असल में उनके बाद के लोगों को सुनाना था और यह भी समझाना था कि काबे की तरफ़ नमाज़ पढ़ने और उस का तवाफ़ करने से किसी जाहिल को यह शक न हो जाए कि ये ही माबूद है) **और मेरे घर को तवाफ़ करने वालों के और** (नमाज़ में) **खड़े होने वालों और रूकू और सजदा करने वालों के वास्ते** (गन्दगी और कुफ़्र व शिर्क से) **पाक रखना** (यह भी असल में दूसरों ही को सुनाना था)(26) **और** (इब्राहीम अलैहिस्सलाम से यह भी कहा गया कि) **लोगों में हज** (के फ़र्ज़ होने) **का ऐलान कर दो** (इस ऐलान से) **लोग तुम्हारे पास** (यानी तुम्हारे इस पाक घर के पास) **चले आएंगे पैदल भी और** (लम्बे सफ़र की वजह से) **दुबली** (हो जाने वाली) **ऊंटनियों पर भी जो कि दूर के रास्तों से पहुंची होंगी**(27) (और वो लोग इसलिए आएंगे) **ताकि अपने** (अपने दीनी और दुनिया के) **फ़ाइदों के लिए हाज़िर हो जाएं और** (इसलिए आएंगे) **ताकि तय दिनों में** (जो क़ुर्बानी के दिन दसवीं से बारहवीं ज़िलहिज्जा तक हैं) **उन ख़ास जानवरों पर** (यानी क़ुर्बानी के जानवरों पर ज़बह के वक़्त) **अल्लाह का नाम लें जो अल्लाह तआ़ला ने उन को दिये हैं,** (ऐ मुसलमानों) **उन** (क़ुर्बानी के) **जानवरों में से तुम भी खाया करो** (कि यह जाइज़ है और मुस्तहब यह है कि) **ग़रीब परीशानहाल को भी खिलाया करो**(28) **फिर** (क़ुर्बानी के बाद) **लोगों को चाहिए कि अपना मैल दूर करें** (यानी अहराम खोल दें बाल कटालें) **और अपने वाजिब हुक्मों को पूरा करें और** (उन्हीं ख़ास दिनों में) **इस अमन वाले घर** (यानी ख़ाना काबा) **का तवाफ़ करें** (यह तवाफ़ तवाफ़े ज़ियारत कहलाता है)(29)

नोटः- वो काम जिनका करना सवाब है और न करना गुनाह नहीं शरीअ़त में 'मुस्तहब' कहलाते हैं।

ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ وَاُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ
فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ۙ﴿۳۰﴾ حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ
فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿۳۱﴾ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ
اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿۳۲﴾ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَاۤ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿۳۳﴾

आयत नं० 30 से 33

यह बात तो हो चुकी (जो हज के ख़ास हुक्म थे) **और** (अब दूसरे आम हुक्म जिनमें हज और हज के सिवा दूसरे मसअले भी हैं सुनो कि) **जो आदमी अल्लाह तआला के इज़्ज़त वाले हुक्मों का अदब करेगा तो यह उसके हक़ में उसके रब के नज़दीक बहुत अच्छा** (है हुक्मों का अदब करने में यह भी दाख़िल है कि उन को जाने और यह भी कि उन पर चले कि यह काम अज़ाब से छुटकारा और सदा के चैन का सामान) **है, और उन सब जानवरों को तुम्हारे लिए हलाल कर दिया है सिवाए उन** (कुछ जानवरों) **के जो तुम को पढ़ कर सुना दिये गये हैं** (यानी सूरत अनआम में और इस जगह जानवरों के हलाल होने का ज़िक्र इसलिए किया गया कि अहराम की हालत में शिकार की पाबन्दी से किसी को अहराम की हालत में जानवरों के मना होने का शक न हो जाए और जब दीन व दुनिया की भलाई अल्लाह के हुक्मों की इ़ज़्ज़त में है) **तो तुम लोग गन्दगी से यानी बुतों से अलग रहो** (क्योंकि मुशरिक लोग हज करते हुए अल्लाह के साथ बुतों का नाम भी लेते थे) **और झूटी बात** (चाहे वो झूट शिर्क की बातों का हो या दूसरी बातों का उस) **से बचते रहो(30)** (इस तरह से कि) **अल्लाह की तरफ़ झुके रहो उस के साथ** (किसी को) **साझी मत ठहराओ, और जो आदमी अल्लाह के साथ शिर्क करता है तो** (उस की हालत ऐसी होगी कि) **जैसे वो आसमान से गिर पड़ा फिर परिन्दों ने उस की बोटियां नोचलीं या हवा ने उस को किसी दूर जगह ले जाकर फेंक दिया(31) यह बात भी हो चुकी और** (अब एक ज़रूरी बात क़ुर्बानी के जानवरों के बारे में सुन लो कि) **जो आदमी अल्लाह के दीन की इन** (बताई) **यादगारों का पूरा अदब करेगा तो उस का यह अदब करना दिल की परहेज़गारी की बात** (है यादगारों के अदब से मुराद अल्लाह के हुक्मों की पाबन्दी है जो क़ुर्बानी के बारे में हैं चाहे ज़बह से पहले के हुक्म या ज़बह के वक़्त के हुक्म जैसे तकबीर पढ़ना या ज़बह के बाद के हुक्म जैसा कि जिसका खाना जिसके लिए हलाल है वो खाए और वो न खाए जिसका खाना जिसके लिए हलाल नहीं) **है(32) तुम को उन**

(जानवरों) **से एक तय वक़्त तक फ़ाइदे उठाना जाइज़ है** (यानी जब तक वो हरम की क़ुर्बानी के लिए नामज़द न किये जाएं तो उन से दूध या सवारी या सामान लादने का फ़ाइदा उठाना जाइज़ है मगर जब उन को नामज़द कर दिया तो फिर उन से कोई नफ़ा उठाना जाइज़ नहीं) **फिर** (नामज़द करने के बाद) **उस के ज़बह हलाल होने की जगह उसी पुराने घर** (यानी ख़ाना काबा) **के आस पास है** (यानी हरम की हदों से बाहर ज़बह न करें)(33)

नोटः- मिना जहां क़ुर्बानी होती है वो हरम की हदों में ही है।

وَ لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ
فَلَهٗۤ اَسْلِمُوْا ؕ وَ بَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۙ۝۳۴ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ الصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَاۤ اَصَابَهُمْ وَ
الْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝۳۵ وَ الْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖۗ فَاذْكُرُوا
اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَ اَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَ الْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا
لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝۳۶ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَ لَا دِمَآؤُهَا وَ لٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ كَذٰلِكَ
سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَ بَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ۝۳۷ اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ۝۳۸

आयत नं० 34 से 38

और (जितने भी शरीअत वाले हुए हैं उन में से) **हम ने हर उम्मत के लिए क़ुर्बानी करना इसलिए रक्खा था कि वो उन ख़ास जानवरों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन को दिये थे** (बस असल चीज़ यह नाम लेना था), **सो** (इससे यह बात निकल आई कि) **तुम्हारा** (सच्चा) **माबूद एक ही ख़ुदा है तो तुम बस उसी के होकर रहो, और** (ऐ पैग़म्बर जो लोग हमारी इस बात पर चलें) **आप** (ऐसे अल्लाह के हुक्मों के सामने) **गर्दन झुका देने वालों को** (जन्नत की) **ख़ुशख़बरी सुना दीजिए(34) जो** (इस तौहीद ख़ालिस की बरकत से) **ऐसे हैं कि जब** (उन के सामने) **अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल डर जाते हैं और जो उन मुसीबतों पर सब्र करते हैं जो उन पर पड़ती हैं और जो नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और जो कुछ हम ने उन को दिया है उसमें से** (अल्लाह के रास्ते में) **ख़र्च करते हैं(35) और क़ुर्बानी के ऊंट और गाय को**

(और इसी तरह भेड़ बकरी को भी) **हम ने अल्लाह** (के दीन) **की यादगार बनाया है** (और) **उन जानवरों में तुम्हारे** (और भी) **फ़ाइदे हैं** (जैसे दुनिया का फ़ाइदा खाना और खिलाना और आख़िरत का फ़ाइदा सवाब है), **सो** (जब उसमें ये भलाइयां हैं तो) **तुम उन पर खड़े करके** (ज़बह करने के वक़्त) **अल्लाह का नाम लिया करो** (खड़े करके ज़बह करना सिर्फ़ ऊंटों के लिए है) **बस जब वो किसी करवट के बल गिर जाएं** (और ठन्डे हो जाएं) **तो** (उन का गोश्त) **तुम ख़ुद भी खाओ और न मांगने वाले** (को भी) **और मांगने वाले को** (भी यानी दोनों क़िस्म के ग़रीबों को) **खाने को दो,** (और) **हमने इन जानवरों को इस तरह तुम्हारा ताबेदार कर दिया ताकि तुम** (इस ताबेदार बनाने पर अल्लाह का) **शुक्र करो**(36) (और) **अल्लाह तआ़ला के पास न उन का गोश्त पहुंचता है और न उन का ख़ून, लेकिन उस के पास पहुंचता है तुम्हारा तक़वा** (यानी नीयत की सच्चाई), **इसी तरह अल्लाह तआ़ला ने इन जानवरों को तुम्हारा ताबेदार कर दिया कि तुम** (अल्लाह के रास्ते में उन को क़ुर्बान करके) **इस बात पर अल्लाह की बड़ाई** (बयान) **करो कि उसने तुम को** (इस तरह क़ुर्बानी करने की) **तौफ़ीक़ दी** (वर्ना अगर अल्लाह की तौफ़ीक़ न होती तो या तो ज़बह ही में शक निकाल कर यह इबादत न कर पाते या अल्लाह के सिवा दूसरों के नाम पर ज़बह करने लगते), **और** (ऐ पैग़म्बर सच्ची नीयत से) **नेक काम करने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए**(37) (और) **यक़ीन जानो कि अल्लाह तआ़ला** (इन मुशरिकों के सताने से जल्दी ही) **ईमान वालों का बचाव करेगा** (कि हज व उमरे से रोक ही न सकेंगे), **बेशक अल्लाह तआ़ला किसी दग़ाबाज़ कुफ़्र करने वाले को पसन्द नहीं करता** (बल्कि ऐसे लोगों से नाराज़ है इसलिए अन्जाम कार इन लोगों को नाकाम और सच्चे मोमिनों को कामयाब करेगा)(38)

नोटः- यहां मालूम हुआ कि इबादत में असल चीज़ नीयत की सच्चाई है इसके बिना इबादतों का असली फ़ाइदा हासिल नहीं होता।

أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقٰتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا ۚ وَإِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ﴿٣٩﴾ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ
حَقٍّ إِلَّآ أَنْ يَّقُولُوا رَبُّنَا اللّٰهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّ
صَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيرًا ۗ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۗ إِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٤٠﴾
الَّذِينَ إِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَأَمَرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ وَلِلّٰهِ
عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿٤١﴾

आयत नं० 39 से 41

इजाज़त लड़ने की (काफ़िरों से अब तक न थी लेकिन अब) **उन लोगों को देदी गई जिन से** (काफ़िरों की तरफ़ से) **लड़ाई की जाती है इस वजह से कि उन पर** (बहुत) **ज़ुल्म किया गया है** (यह वजह है जिहाद के जाइज़ होने की), **और** (इस इजाज़त की हालत में मुसलमानों के कम होने और काफ़िरों के ज़्यादा होने पर नज़र न करना चाहिए क्योंकि) **बेशक अल्लाह तआ़ला उन** (मुसलमानों) **को जीत दिलाने की पूरी क़ुदरत रखता है(39) जो** (बेचारे) **अपने घरों से निकाले गये सिर्फ़ इतनी बात पर कि वो यह कहते हैं कि हमारा रब अल्लाह है** (यानी तौहीद के अक़ीदे पर काफ़िरों का यह ग़ुस्सा था कि उन को इतना परीशान किया कि वतन छोड़ना पड़ा), **और** (जिहाद में छुपी भलाई के बारे में बताते हैं कि) **अगर यह बात न होती कि अल्लाह तआ़ला** (सदा से) **लोगों का एक दूसरे** (के हाथ) **से ज़ोर न घटावाता रहता** (यानी हक़ वालों को नाइन्साफ़ों पर कभी-कभी हावी न करता रहता) **तो** (अपने अपने ज़मानों में) **ईसाइयों और यहूदियों की इबादत गाहें और** (मुसलमानों की) **वो मस्जिदें जिन में अल्लाह का नाम बहुत लिया जाता है सब ढाए** (जाते और मिट) **जाते, और बेशक अल्लाह तआ़ला उसकी मदद करेगा जो कि अल्लाह** (के दीन) **की मदद करेगा** (यानी उस का लड़ना सिर्फ़ अल्लाह के लिए हो), **बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ी ताक़त वाला** (और) **ज़ोर वाला** (है वो जिसको चाहे ताक़त और हुकूमत दे सकता) **है(40)** (और) **ये लोग ऐसे हैं कि अगर हम इन को दुनिया में हुकूमत देदें तो ये लोग ख़ुद भी नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें और** (दूसरों को भी) **नेक कामों के करने को कहें और बुरे कामों से मना करें, और सब कामों का अन्जाम तो अल्लाह ही के क़ब्ज़े में है** (बस मुसलमानों की अब की हालत देख कर यह कोई क्योंकर कह सकता है कि अन्जाम भी उन का ये ही रहेगा बल्कि हो सकता है कि इस का उलट हो जाए जैसा कि ऐसा ही हुआ)(41)

नोटः- ऊपर वाली आयत में दी गई ख़ुशख़बरी इस बात की दलील है कि ख़ुलफ़ाए राशिदीन सब के सब हक़ पर थे और उन के ज़माने में जो इन्तिज़ाम हुकूमत का था वो हक़ और सही और अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी के मुताबिक़ था।

وَ اِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ عَادٌ وَّ ثَمُوْدُ ﴿۴۲﴾ وَ قَوْمُ اِبْرٰهِيْمَ وَ قَوْمُ لُوْطٍ ﴿۴۳﴾ وَّ اَصْحٰبُ
مَدْيَنَ ۚ وَ كُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۴۴﴾ فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ

اَهْلَكْنٰهَا وَ هِىَ ظَالِمَةٌ فَهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَ بِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّ قَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿٤٥﴾ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى
الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَاۤ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَ لٰكِنْ تَعْمَى
الْقُلُوْبُ الَّتِىْ فِى الصُّدُوْرِ ﴿٤٦﴾ وَ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَ لَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ؕ وَ اِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ
كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾ وَ كَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَ هِىَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَ اِلَىَّ الْمَصِيْرُ ﴿٤٨﴾
قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَاۤ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٩﴾ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ
كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾ وَالَّذِيْنَ سَعَوْا فِىْۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾

आयत नं० 42 से 51

और (ऐ पैग़म्बर) **ये** (झगड़ने वाले लोग) **अगर आप को झुटलाते हैं तो** (आप ग़म न करें क्योंकि) **इन लोगों से पहले झुटला चुकी हैं नूह की क़ौम और आद व समूद** (की क़ौमें)**(42) और इब्राहीम की क़ौम और लूत की क़ौम(43) और मदयन वाले भी** (अपने-अपने नबियों को झुटला चुके हैं) **और मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को भी झूटा बताया** (मगर झुटलाने के बाद) **मैंने उन काफ़िरों को** (कुछ दिन) **मोहलत दी** (जैसे आज के काफ़िरों को मोहलत दे रक्खी है) **फिर मैंने उन को** (अ़ज़ाब में) **पकड़ लिया तो** (देखो) **मेरा अज़ाब कैसा हुआ (44)** सो कितनी बस्तियां हैं जिन को हमने (अज़ाब से) **हलाक किया जिनकी हालत यह थी कि वो ज़ुल्म** (और नाफ़रमानी) **करती थी तो** (अब उनकी यह हालत है कि) **वो अपनी छतों पर गिरी पड़ी हैं** (यानी वीरान हैं कि पहले छत गिरी फिर दीवारें आपड़ी) **और** (इसी तरह उन बस्तियों में) **बहुत से बेकार कुएं** (जो पहले आबाद थे) **और बहुत से पक्के कली चूने के महल** (जो अब टूट गये हैं ये सब उन बस्तियों के साथ तबाह हुए बस इसी तरह अपने वक़्त पर इस ज़माने के लोग भी अज़ाब में पकड़े जाएंगे)**(45) तो क्या यह** (सुन कर) **लोग मुल्क में चले फिरे नहीं जिससे उनके दिल ऐसे हो जाएं कि उनसे समझने लगें या उनके कान ऐसे हो जाएं कि उन से सुनने लगें, बात यह है कि** (न समझने वालों की कुछ) **आंखें अन्धी नहीं हो जाया करतीं बल्कि दिल जो सीनों में हैं वो अन्धे हो जाते हैं** (इन काफ़िरों के भी दिल अन्धे हो गये वर्ना पहली उम्मतों की हालतों से सबक़ लेते)**(46) और ये लोग** (पैग़म्बरी में शक डालने के लिए) **आप से अज़ाब** (जल्दी लाने) **की मांग करते हैं** (और अज़ाब के जल्दी न आने से यह दलील लेते हैं कि अज़ाब आने वाला ही नहीं) **जब कि अल्लाह तआ़ला कभी अपना वादा ख़िलाफ़ न करेगा** (यानी वादे के वक़्त पर ज़रूर अज़ाब होगा), **और**

आप के रब के पास का एक दिन (जिसमें अज़ाब होगा यानी क़ियामत का दिन गिनती या सख़्ती में) **एक हज़ार साल की बराबर है तुम लोगों की गिनती के हिसाब से** (तो ये बड़े बेवकूफ़ हैं कि ऐसी मुसीबत की मांग करते हैं)(47) **और** (फिर सुन लो कि) **बहुत सी बस्तियां हैं जिन को मोहलत दी थी और वो ज़ुल्म** (और नाफ़रमानी) **करती थीं फिर मैंने उन को** (अज़ाब में) **पकड़ लिया और सब को मेरी ही तरफ़ लौटना होगा** (उस वक़्त पूरी सज़ा मिलेगी)(48) **आप** (यह भी) **कह दीजिए कि ऐ लोगों मैं तुम्हारे लिए एक साफ़ डराने वाला** (पैग़म्बर) **हूं** (अज़ाब देने या न देने में मेरा दख़्ल नहीं न मैंने इसका दावा किया है)(49) **तो जो लोग** (इस डर को सुन कर) **ईमान ले आएं और अच्छे काम करने लगे उन के लिए मुआफ़ी और इज़्ज़त की रोज़ी** (यानी जन्नत) **है**(50) **और जो लोग हमारी आयतों के बारे में** (उनके इनकार और झुटलाने की) **कोशिश करते रहते हैं** (पैग़म्बर और मोमिनों को) **हराने** (यानी मजबूर करने) **के लिए ऐसे लोग दोज़ख़ में** (रहने) **वाले हैं**(51)

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّآ اِذَا تَمَنّٰۤى اَلْقَى الشَّيْطٰنُ فِيْۤ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِي
الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝۵۲ لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ
مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ۝۵۳ وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝۵۴ وَلَا يَزَالُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ۝۵۵ اَلْمُلْكُ
يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝۵۶ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝۵۷

आयत नं० 52 से 57

और (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ये लोग जो शैतान के बहकाने से आप से झगड़ा करते हैं यह कोई नई बात नहीं बल्कि) **हम ने आप से पहले कोई रसूल और कोई नबी ऐसा नहीं भेजा जिस के साथ यह क़िस्सा न हुआ हो कि जब उस ने** (अल्लाह तआ़ला के हुक्मों में से) **कुछ पढ़ा** (तब ही) **शैतान ने उस के पढ़ने में** (काफ़िरों के दिलों में) **शक** (और ऐतराज़) **डाला** (और काफ़िर उन्हीं शक व ऐतराज़ों को पेश करके पैग़म्बरों से बहस व झगड़ा किया करते थे),

फिर अल्लाह तआ़ला शैतान के डाले हुए शक को (साफ़ दलीलों के जवाब से) **मिटा देता है** (जैसा कि सही जवाब के बाद ऐतराज़ दूर हो जाता है) **फिर अल्लाह तआ़ला अपनी आयतों** (की बातों) **को** (उन जवाबों से और) **ज़्यादा मज़बूत कर देता है, और अल्लाह तआ़ला** (इन ऐतराज़ों के बारे में) **ख़ूब इल्म वाला है** (और उनके जवाब सिखाने में) **ख़ूब हिकमत वाला है**(52) (और यह सारा क़िस्सा इसलिए बयान किया है) **ताकि अल्लाह तआ़ला शैतान के डाले हुए शक शुबहों को ऐसे लोगों के लिए इम्तिहान** (का सामान) **बना दे जिन के दिल में** (शक की) **बीमारी है और जिन के दिल** (बिल्कुल ही) **सख़्त** (हैं कि वो शैतान के बहकाने से शक से बढ़ कर झूट का यक़ीन किये हुए हैं सो उन का इम्तिहान होता है कि देखें जवाब के बाद अब भी शकों पर चलते हैं या जवाब को समझ कर हक़ को मानते) **हैं, और असल में** (ये) **ज़ालिम लोग** (यानी शक करने वाले भी और झूट का यक़ीन करने वाले भी) **बड़ी मुख़ालफ़त में** (हैं कि सच्चाई जानने के बाद भी हटधर्मी की वजह से नहीं मानते) **हैं**(53) **और** (इन शक व शुबहों को इसलिए दूर किया जाता है) **ताकि जिन लोगों को** (सही) **समझ दी गई है वो** (इन जवाबों से) **इस बात का ज़्यादा यक़ीन करलें कि यह** (जो नबी ने पढ़ा है वो) **आप के रब की तरफ़ से हक़ है सो ईमान पर ज़्यादा जम जाएं फिर** (ज़्यादा यक़ीन की बरकत से) **उस** (पर अमल करने) **की तरफ़ उन के दिल और भी झुक जाएं, और सचमुच उन ईमान वालों को अल्लाह तआ़ला ही सीधा रास्ता दिखाता है** (फिर क्योंकर इनको हिदायत न हो)(54) **और** (रहे) **काफ़िर लोग** (सो वो) **सदा उस** (पढ़े हुए हुक्म) **की तरफ़ से शक ही में रहेंगे** (जो उन के दिल में शैतान ने डाला था) **यहां तक कि उन पर अचानक क़ियामत आजाएगी** (जिस का डर ही काफ़ी है चाहे अज़ाब न भी होता) **या** (इससे बढ़ कर यह कि) **उन पर किसी बेबरकत दिन** (यानी क़ियामत के दिन) **का अज़ाब आ पहुंचे** (मतलब यह कि ये बिना अज़ाब देखे कुफ़्र से बाज़ न आएंगे मगर उस वक़्त फ़ाइदा न होगा)(55) **बादशाही उस दिन अल्लाह ही की होगी, वो उन सब** (लोगों) **के बीच** (खुला) **फ़ैसला कर देगा, तो जो लोग ईमान लाएं होंगे और अच्छे काम किये होंगे वो चैन के बाग़ों में होंगे**(56) **और जिन्होंने कुफ़्र किया होगा और हमारी आयतों को झुटलाया होगा तो उन के लिए रूसवाई का अज़ाब होगा**(57)।

وَ الَّذِیۡنَ هَاجَرُوۡا فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوۡۤا اَوۡ مَاتُوۡا لَیَرۡزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزۡقًا حَسَنًا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَیۡرُ
الرّٰزِقِیۡنَ ﴿۵۸﴾ لَیُدۡخِلَنَّهُمۡ مُّدۡخَلًا یَّرۡضَوۡنَهٗ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَعَلِیۡمٌ حَلِیۡمٌ ﴿۵۹﴾ ذٰلِكَ ۚ وَمَنۡ عَاقَبَ بِمِثۡلِ مَا عُوۡقِبَ

بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿٦٠﴾

आयत नं० 58 से 60

और जिन लोगों ने अल्लाह के रास्ते में (यानी दीन की हिफ़ाज़त के लिए) **अपना वतन छोड़ा फिर वो लोग** (काफ़िरों के मुक़ाबिले में) **क़त्ल किये गये या** (वैसे ही अपनी मौत) **मर गये** (वो नाकाम व महरूम नहीं चाहे उन को दुनिया का नफ़ा न मिले मगर आख़रत में) **अल्लाह तआ़ला उन को ज़रूर अच्छी रोज़ी देगा** (यानी जन्नत की अनगिनत नेमतें), **और बेशक अल्लाह तआ़ला सब देने वालों से अच्छा** (देने वाला) **है(58)** (और इस अच्छी रोज़ी के साथ) **अल्लाह तआ़ला उन को** (घर भी अच्छा देगा यानी) **ऐसी जगह ले जाकर दाख़िल करेगा जिस को वो** (बहुत ही) **पसन्द करेंगे** (रही यह बात कि बहुत से हिजरत करने वाले नाकाम क्यों हुए उन की मदद क्यों न हुई तो इसकी वजह यह है कि) **बेशक अल्लाह तआ़ला** (हर काम की हिकमत व भलाई को) **ख़ूब जानने वाला है** (उन की इस नाकामी में बहुत सी भलाइयां छुपी हैं और) **बहुत सहार वाला** (है इसलिए दुशमनों को एकदम सज़ा नहीं देता) **है(59) यह** (बयान तो) **हो चुका और** (आगे यह सुनो कि) **जो आदमी** (दुशमन को) **उतनी ही तकलीफ़ पहुंचाए जितनी** (दुशमन की तरफ़ से) **उस को तकलीफ़ पहुंचाई गई थी फिर** (इस बराबर सराबर हो जाने के बाद अगर उस दुशमन की तरफ़ से) **उस आदमी को फिर सताया जाए तो अल्लाह तआ़ला उस आदमी की ज़रूर मदद करेगा, बेशक अल्लाह तआ़ला बहुत मुआफ़ करने वाला बहुत बख़्शने वाला है(60)**

नोटः- अगर यह मोमिन पहली बार सताए जाने पर पहले ही सब्र करता तो इस का दर्जा बहुत ऊंचा होता भले ही ज़ुल्म का उतना ही बदला लेना जाइज़ है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ يُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَ اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٦١﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ
الْحَقُّ وَ اَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً ؗ فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿ۚ٦٣﴾ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ
الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦٤﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ وَ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ وَ يُمْسِكُ السَّمَآءَ
اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٥﴾ وَ هُوَ الَّذِيْۤ اَحْيَاكُمْ ؗ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ
يُحْيِيْكُمْ ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ﴿٦٦﴾

आयत नं० 61 से 66

यह (मोमिनों का हावी कर देना) **कि अल्लाह तआ़ला** (की बड़ी क़ुदरत है वो) **रात** (के कुछ हिस्से) **को दिन में और दिन** (के कुछ हिस्से) **को रात में दाख़िल कर देता है** (यह दुनिया का बदलाव एक क़ौम को दूसरी क़ौम पर हावी करने वाले बदलाव से ज़्यादा अचम्भे की बात है) **और इस वजह से है कि अल्लाह तआ़ला** (इन सब की बातों और हाल को) **ख़ूब सुनने वाला ख़ूब देखने वाला** (है वो काफ़िरों के ज़ुल्म और मोमिनों की मजबूरी को सुनता देखता) **है(61) और यह** (मदद) **इस वजह से** (यक़ीनी) **है कि** (इसमें किसी ताक़त की मजाल नहीं जो इसमें अल्लाह तआ़ला के हुक्मों में रूकावट करे क्योंकि) **अल्लाह ही हक़ है और जिन चीज़ों की अल्लाह के सिवा ये लोग इबादत कर रहे हैं वो सब झूट है** (कि वो मुहताज भी हैं कमज़ोर भी वो क्या अल्लाह के हुक्मों में रूकावट कर सकते हैं) **और अल्लाह ही ऊंची शान वाला सब से बड़ा** (है इस में सोचने से तौहीद का हक़ होना और शिर्क का ग़लत होना हर आदमी समझ सकता) **है(62) क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह तआ़ला ने आसमान से पानी बरसाया जिससे ज़मीन हरीभरी हो गई,** (फिर) **बेशक अल्लाह तआ़ला बहुत महरबान सब बातों का जानने वाला** (है इसलिए बन्दों की ज़रूरतों को जानकर उसी हिसाब से महरबानी करता) **है(63) सब उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और बेशक अल्लाह तआ़ला ही ऐसा है जो किसी का मुहताज नहीं हर तरह की तारीफ़ के लाइक़ है(64)** (और) **क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह तआ़ला ने तुम लोगों के काम में लगा रक्खा है ज़मीन की चीज़ों को और कशती को** (भी) **कि वो दरिया में उस के हुक्म से चलती है, और वो ही आसमानों को ज़मीन पर गिरने से थामे हुए हैं हां मगर यह कि उसी का हुक्म हो जाए** (तो यह सब कुछ हो सकता है, और बन्दों के गुनाह और बुरे कामों की वजह से ऐसा हो जाना चाहिए था मगर फिर भी यह हुक्म नहीं देता तो वजह यह है कि) **बेशक अल्लाह तआ़ला लोगों पर नर्मी करने वाला और रहमत करने वाला है(65) और वो ही है जिसने तुम को ज़िन्दगी दी फिर** (अपने वक़्त पर) **तुम को मौत देगा फिर** (क़ियामत में) **तुम को ज़िन्दा करेगा,** (इन नेमतों व अहसानों की वजह से चाहिए था कि लोग तौहीद अपनाते और अल्लाह का शुक्र अदा करते मगर) **सचमुच इन्सान है बड़ा नाशुक्रा** (कि अब भी कुफ़्र व शिर्क से बाज़ नहीं आता, ऐसे सब इन्सान नहीं बल्कि वो ही जो नाशुक्रे हैं)(66)।

لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْاَمْرِ وَ ادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٦٧﴾ وَ اِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٨﴾ اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ
تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
يَسِيْرٌ ﴿٧٠﴾ وَ يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّ مَا لَيْسَ لَهُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ
نَّصِيْرٍ ﴿٧١﴾ وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ؕ يَكَادُوْنَ يَسْطُوْنَ بِالَّذِيْنَ
يَتْلُوْنَ عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ؕ قُلْ اَفَاُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ اَلنَّارُ ؕ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَ بِئْسَ
الْمَصِيْرُ ﴿٧٢﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّ لَوِ
اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ وَ اِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَ الْمَطْلُوْبُ ﴿٧٣﴾ مَا قَدَرُوا
اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٧٤﴾

आयत नं० 67 से 74

(जितनी उम्मतें शरीअत वाली हुई हैं उनमें) **हम ने हर उम्मत के लिए इबादत करने का एक तरीक़ा रक्खा है कि वो उसी तरीक़े पर इबादत किया करते थे तो** (ऐतराज़ करने वाले) **लोगों को चाहिए कि इस मुआमले में आप से झगड़ा न करें** (उन को तो आप से बहस और झगड़ा करने का हक़ नहीं मगर आप को हक़ है इसलिए) **आप** (उन को) **अपने रब** (यानी उस के दीन) **की तरफ़ बुलाते रहिए, बेशक आप सही रास्ते पर हैं** (सही रास्ते पर चलने वाले को हक़ होता है कि ग़लत रास्ते पर चलने वालों को अपनी तरफ़ बुलाए ग़लत रास्ते वाले को यह हक़ नहीं होता)(67) **और अगर** (इस पर भी) **ये लोग आप से झगड़ा करते हैं तो आप यह कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों को ख़ूब जानता है** (वो ही तुम को समझेगा)(68) **अल्लाह तआ़ला तुम्हारे बीच क़ियामत के दिन** (खुला) **फ़ैसला कर देगा जिन चीज़ों में तुम झगड़ते थे(69) क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह तआ़ला सब चीज़ों को जानता है जो कुछ आसमान और ज़मीन में हैं,** (और यह भी) **यक़ीनी बात है कि यह** (यानी उनकी सब बातें और काम) **आमाल नामे में** (भी लिखी) **हैं,** (बस) **बेशक** (साबित हो गया कि) **यह** (फ़ैसला करना) **अल्लाह तआ़ला के लिए आसान है(70) और ये** (मुशरिक) **लोग अल्लाह तआ़ला के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जिन** (की इबादत के जाइज़ होने) **पर अल्लाह तआ़ला ने कोई दलील**

(अपनी किताब में) **नहीं भेजी और न उनके पास इसकी कोई जानकारी है, और** (क़ियामत में जब इन को शिर्क पर सज़ा होने लगेगी तो) **इन ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा** (कि उनको किसी तरह अज़ाब से बचाले)(71) **और** (इन लोगों की गुमराही और हटधर्मी यहां तक बढ़ी है कि) **जब इन लोगों के सामने हमारी आयतें जो कि बहुत साफ़ है पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो तुम काफ़िरों के चेहरों में** (नागवारी की वजह से) **बुरे आसर देखते हो** (जैसे चेहरे पर बल पड़ जाना नाक चढ़ाना, और इन आसर से) **ऐसा लगता है उन लोगों पर हमला कर देंगे जो हमारी आयतें उनके सामने पढ़ रहे हैं, आप** (इन मुशरिकों से) **कह दीजिए कि** (तुम को जो ये क़ुरआन की आयतें सुन कर नागवारी हुई तो) **क्या मैं तुम को इससे** (भी) **ज़्यादा नागवार चीज़ बता दूं, वो दोज़ख़ है,** (कि) **उसका अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों से वादा किया है, और बुरा ठिकाना** (है यानी क़ुरआन से नागवारी का नतीजा नागवार दोज़ख़) **है**(72) **ऐ लोगों एक अजीब बात बयान की जाती है उस को ध्यान से सुनो,** (वो यह है कि) **इसमें कोई शक नहीं कि जिन की तुम लोग अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते हो वो एक** (छोटी सी) **मक्खी को तो पैदा कर ही नहीं सकते चाहे** (इस काम के लिए) **सब के सब भी** (क्यों न) **जमा हो जएं, और** (पैदा करना तो बड़ी बात है वो तो ऐसे बेबस हैं कि) **अगर उन से मक्खी कुछ** (उनके चढ़ावे में से) **छीन ले जाए तो उस को** (तो) **उससे छुड़ा** (ही) **नहीं सकते, ऐसा इबादत करने वाला भी कमज़ोर और जिसकी इबादत की जाए वो भी कमज़ोर**(73) (अफ़सोस है) **इन लोगों ने अल्लाह की जैसी इज़्ज़त करनी चाहिए थी** (कि उसके सिवा किसी की इबादत न करते) **वो न की** (कि शिर्क करने लगे, हालांकि) **अल्लाह तआ़ला बड़ी ताक़त वाला सब पर छाया हुआ है** (तो इबादत उस का ख़ालिस हक़ था न कि दूसरों का जो हर तरह से कमज़ोर हैं)(74)।

नोटः- मौजूदा शरीअत आजाने के बाद अब किसी पहली शरीअ़त पर अमल करना जाइज़ नहीं अपने ज़माने में वो शरीअ़तें बेशक हक़ थीं।

اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۚ﴿۷۵﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا
خَلْفَهُمْ ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۷۶﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَ اسْجُدُوْا وَ اعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَ افْعَلُوا الْخَيْرَ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۚ﴿۷۷﴾ وَ جَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَ مَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ
مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۬ۙ مِنْ قَبْلُ وَ فِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَ تَكُوْنُوْا

شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ۚ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ۗ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٧٨﴾

आयत नं० 75 से 78

अल्लाह तआ़ला (की मर्ज़ी है पैग़म्बरी के लिए जिसको चाहता है) **चुन लेता है फ़रिशतों में से** (जिन फ़रिशतों को चाहे अपने) **हुक्म** (नबियों के पास) **पहुंचाने वाले** (तय कर देता है) **और** (इसी तरह) **आदमियों में से भी** (जिस को चाहे आम लोगों के लिए हुक्म पहुंचाने वाले तय कर देता है), **बेशक अल्लाह तआ़ला ख़ूब सुनने वाला ख़ूब देखने वाला है**(75) (यानी) **वो उन** (सब फ़रिशतों और इन्सानों) **की अगली और पिछली बातों को** (ख़ूब) **जानता है, और सब कामों का दारोमदार अल्लाह ही पर है** (है यानी अल्लाह तआ़ला से उसके किसी काम की वजह पूछने का हक़ किसी को नहीं) **है**(76) **ऐ ईमान वालो** (तुम दीन के हुक्मों की पाबन्दी रक्खो, ख़ास कर नमाज़ की, बस तुम) **रूकू किया करो और सजदा किया करो और** (दूसरे हुक्मों की पाबन्दी के साथ) **अपने रब की इबादत किया करो और नेक काम किया करो उम्मीद** (यानी वादा) **है कि तुम कामयाब हो जाओगे**(77) **और अल्लाह के काम में ख़ूब कोशिश किया करो जैसा कोशिश करने का हक़ है, उसने तुम को** (दूसरी क़ौमों के मुक़ाबिले) **पसन्द किया और तुम पर दीन में किसी क़िस्म की तंगी नहीं रक्खी,** (और ईमान वालो जिस इस्लाम का तुम को हुक्म किया गया है ये ही इब्राहीम का दीन है) **तुम अपने बाप इब्राहीम के दीन पर जमे रहो, उसी ने तुम्हारा नाम मुसलमान रक्खा पहले भी और इस** (क़ुरआन) **में भी ताकि तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह गवाह बनें और** (इस रसूल की गवाही से पहले) **तुम** (एक बड़े मुक़दमे में जिस में एक फ़रीक़ पैग़म्बर होंगे और दूसरे फ़रीक़ उन की मुख़ालिफ़ क़ौमें होंगी उन मुख़ालिफ़) **लोगों के मुक़ाबिले में गवाह बनो** (और रसूल की गवाही से तुम्हारी गवाही की तस्दीक हो और पैग़म्बरों के हक़ में फ़ैसला हो), **सो** (हमारे हुक्मों की पूरी पाबन्दी करो, बस) **तुम लोग** (ख़ास कर) **नमाज़ की पाबन्दी रक्खो और ज़कात देते रहो और** (बाक़ी हुक्मों में भी) **अल्लाह ही को मज़बूत पकड़े रहो** (यानी हिम्मत के साथ दीन के हुक्म पूरे करो न दूसरों को राज़ी करने की फ़िक्र करो और न अपने जी का कहना मानो) **वो** (ही) **तुम्हारा रखवाला है सो कैसा अच्छा रखवाला है और कैसा अच्छा मददगार है**(78)।

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने तुम्हारे लिए दो चीज़ें ऐसी छोड़ी हैं कि तुम जब तक इन दोनों को पकड़े रहोगे गुमराह न होंगे एक अल्लाह की किताब दूसरे उस के रसूल की सुन्नत। (मज़हरी)